﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ﴾

इमाम सज्जाद अलैहिस-सलाम और इन्सानी तरबीयत

लेखक

हुज्जतुल– ईस्लाम वलमुसलेमीन डाक्टर

मौलाना अब्दुल्लाह अहमद अल–युसूफ (क़तीफ)

अनुवाद

हुज्जतुल–ईस्लाम वलमुसलेमीन मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)

इमाम सज्जाद अलैहिस-सलाम

और

इन्सानी तर्बियत

लेखक

हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन डॉक्टर
मौलाना **अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ**(क़तीफ)

अनुवाद

हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)

प्रकाशक

इदारा–ए–इस्लाह लखनऊ–226003, यूपी, इंडिया

सहयोग :**इमाम अल–महदी अज. ट्रस्ट**

अल्लाह के नाम से जो रहमान व रहीम है

नाम पुस्तक	:	इमाम सज्जाद अ.स.और इन्सानी तर्बियत
लेखक	:	हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन डॉक्टर मौलाना अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ(क़तीफ)
अनुवादक	:	हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)
वर्ष	:	सितम्बर 2021
पेज	:	64
मुद्रण	:	इम्प्रेशन ऑफसेट प्रेस, लखनऊ
मूल्य	:	25 रुपये
प्रकाशक	:	इदारा ए इस्लाह, लखनऊ–226003
सहयोग	:	इमाम अल–मैहदी अज. ट्रस्ट

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ

(हमने इन्सान को बेहतरीन साख़त में पैदा किया है।)

सूरा–ए–तीन ,आयतः4

विषय–सूची

क्र	विषय	पेज
1	प्रकाशक नोट	6
2	प्रस्तावना	7
3	अनुवादक के क़लम से	10
4	हदिया	15
5	इमाम सज्जाद अ0 और दुआओं के द्वारा तर्बियत	16
6	सहिफ़ए सज्जादिया और दुआओं से तर्बियत	19
7	दुआ के आसार	26
8	इस्तिजाबत की शर्तें	28
9	मारेफते ख़ुदा	28
10	अल्लाह के अहकाम पर अमल	28
11	क़ल्बी रुजहान	29
12	हलाल रोज़ी	29
13	कैफियते दुआ	30
14	मुनासिब वक़्त	31
15	इस्तिजाबत (क़ुबूलियत) में रुकावटें	31
16	गुनाह	31
17	दूसरों पर ज़ुल्म–व–सितम	32
18	अम्र बिलमारुफ और नही अनिलमुनकर को छोड़देना	32
19	हराम गिज़ा	33
20	मसलेहते ख़ुदा	34
21	मक़बूल दुआए	34
22	औलाद के लिए बाप की दुआ या बद्दुआ	34
23	ज़ालिम के लिए मज़लूम की बद्दुआ	35
24	मोमिन की मोमिन के हक़ में दुआ	35
25	कसरत से क़ुरआन की तिलावत करने वाले की दुआ	36
26	इमाम सज्जाद अ0 और ग़ुलामों की तर्बियत	37
27	इमाम और ग़ुलाम	38
28	ग़ुलामों और कनीज़ों से अच्छा बर्ताव	41
29	ग़ुलामों की तालीम–व–तर्बियत	41

30	कनीज़ों से शादी और उनसे औलाद	41
31	गुलामों से अफव–ओ–गुज़श्त	44
32	गुलामों और कनीज़ों को आज़ाद करना	46
33	इमाम सज्जाद अ0 और फ़ुक़रा की देखभाल	48
34	फ़ुक़रा के साथ नेक बर्ताव	48
35	फ़ुक़रा का ऐहतराम	48
36	ग़रीबों से नरमी	48
37	साएल को रद्द न करना	49
38	मक़रूज़ के क़र्ज़ की अदायगी	50
39	आम दस्तरख़्वान	50
40	ग़रीबों की किफालत	50
41	पोशीदा मदद	51
42	इमाम सज्जाद अ0 और रिसालए हुक़ूक़	54
43	इन्सानी हुक़ूक़ का बुनयादी ख़ाका	54
44	रिसालए हुक़ूक़ के इमतियाज़ात वख़ूसुसीयात	55
45	अहम हुक़ूक़	56
46	रिश्तेदारों के हुक़ूक़	57
47	आम लोग और दीगर चीज़ों के हुक़ूक़	57
48	रिसालए हुक़ुक़ और समाजी अदल–ओ–इन्साफ़	58
49	मसादिर–व–अस्नाद	60
50	तआरुफ लेखक	63

बिस्मेही तआला

प्रकाशक नोट

अलहम्दो ल अहलही वस–सलातो अला अहलहा

बहुत ही अधिककष्ट व पीढ़ा उठाने के बाद भी इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस–सलाम ने इमामत की ज़िम्मेदारियों कोबख़ूबी अंजाम देते हुए इन्सानी तर्बीयत के जो कारनामे अंजाम दिए हैं वो रहती दुनिया तक नाक़ाबिले फरामोश रहेंगे।बिलख़ुसूस सहीफा–ए–कामिला की दुआओं में क्या–क्या बेहतरीन तालीमात मौजूद हैं। इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस–सलाम का रिसाला–ए–हुकुक़ भी इन्सानी तर्बीयत के सिलसिले में एक दुर्लभ नेअमत है। माबूद जज़ाए ख़ैर दे हुज्जतुल–इस्लाम वलमुसलेमीन डॉक्टर मौलाना अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ (क़तीफ) को कि उन्होंने इस किताब में इन्सानी तर्बीयत के सिलसिले में इमाम ज़ैनुल अबेदीन अलैहिस–सलाम के तालीमात पर बड़े ही दिल–नशीं अंदाज में रौशनी डाली है। जिसका आमफ़हम और आसानअनुवाद जवान–व–फआल आलिमे दीन हुज्जतुल–इस्लाम मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन साहब मुबल्लिग़े कुवैत ने किया है। इस किताब कोपढ़ने से पाठक को दुनिया के प्रशिक्षितका परिचय हासिल होगा। बेहम्दोलिल्लाह इदारा–ए–इस्लाह इसकेप्रकाशन का गर्व हासिल कर रहा है। दुआ फरमाते रहें कि इस तरह के गर्व ब–तौफ़ीक़ात–ए ईलाही–व–बताईदाते मासूमीन अलैहिमुस्सलाम बिलख़ुसूस हज़रत हुज्जत अज्जजालल्लाहो फ़रजजाहुशरीफ की ज़ेरे सरपरस्ती ये कारवाँख़िदमत पेशक़दमी करता रहे।

फ़क़त
सैय्यद मोहम्मद जाबिर जौरासी
संचालक:इदारा–ए–इस्लाह, लखनऊ
15–जमादिल अव्वल 1442 हि. 1382 शहादते हुसैनी

प्रस्तावना

इमाम अली इब्नुल–हुसैन बिन अली बिन अबुतालिब हज़रतसैय्यदे सज्जाद अलैहिस्सलाम(38 हि. से 95 हि.) इमामत के सिलसिले की चौथी कड़ी और अहले बैत–ए–अतहार अ. में से हैं। आपसे अल्लाह ने हर रिज्स–व–बुराई को दूर रखा है।

इमाम सज्जाद अ. ने अपने इमामत के समयमें बग़ैर तफ़रीक़ ख़ास–व–आम के लिए मनारा–ए–इल्म और मरकज़े तर्बीयत होने के साथ साथ शरीयत के हक़ीक़ी तर्जुमान और मुफस्सिरे कुरआन भी थे।

आप इबादत, ज़ोहद, तक़्वा और परहेज़गारी की आला मिसाल थे। आप (अ.) को साजेदीन का सरदार, ईबादत गुज़ारों की ज़ीनत और परहेज़गारों का पेशवा कहा गया है।

इमाम सज्जाद अ. ने अपनी जिंदगी में बहुत सी दुर्घटनाओं और तल्ख़ियों का सामना किया जिनमें वाक़ियाए कर्बला सबसे ज़्यादा दुखद व कर्बनाक था और इस के असरात भी इस क़दर तल्ख़और दर्द देने वाले थे कि इमाम सज्जाद अ. पूरी जिन्दगी सब्र–व–वक़ार और हिक्मत के साथ उन्हें याद करते रहे।

इमाम सज्जाद अ. ने अपने वालिद इमाम हुसैन अलैहिस–सलाम की शहादत के बाद पहली सदी हिजरी के दूसरे दौर के अशांतमाहौल में, इमामत की बागडोर संभाली और सभीकठिनाईयों और समाज की विपरीत परिस्थितियों के बावजूद इमामत–व–क़यादत(नेतृत्व) के कर्तव्यनिभाते रहे।

इमाम सज्जाद अ. उम्मत पर मंडलाते ख़तरात का करीब से जायज़ा ले रहे थे, जिनमें सबसे मुख्य उम्मते मुस्लिमा का दूसरों के ग़ैर इस्लामी

संस्कृति से प्रभावित होना था जिसने मुसलमानों की पहचान–व–व्यक्तित्व और इस्लामी उम्मत के रहन–सहन को बदल दिया था।

दूसरीस्थितीय धार्मिक और नैतिकमूल्यों का दमन और समाज में बुराईयों का बढ़ना और लोगों का दुनियावी ऐश–व–इशरत में डूबजाना था। जिसका आधारित लक्ष्य ये था कि इस तरह लोगों को दुनियावी चमक–दमकमें उलझा कर इस्लामी अनुष्ठान और इस्लाम के उच्चलक्ष्य और उद्देश्य से दूर किया जा सके।

ऐसे हालात में इमाम सज्जाद अ0ने वाक़िया–ए–कर्बला के बाद इन्सानी समाज के तामीर–व–प्रशितण के लिए समाज में लोगों की दीनी–व–इल्मी प्रशितण की मुहिम चलाई और ऐसे शिष्य तैयार किए जो समाज में शिक्षक और मुरब्बी होने के साथ साथ उम्मते मुस्लिमा को मज़ीद ख़ताओं और गलतियों से बचा सकें एवं समाज के इल्मदोस्त वर्ग में उलूम–व–मआरिफ को आम करें।

इमाम सज्जाद अ0 की तरबीयत–व–ख़िदमात का लक्ष्य मानवी मरण और समाज में तालीम–व–तरबीयतथा क्योंकि उम्मत काविकास और सांस्कृ तिकतरक्की और विकास में लोगों की तर्बीयत बुनियादी हैसियत रखती है।

इन्सानी समाज की तालीम–व–तर्बीयत में इमाम सज्जाद अ. के कार्यों पर इस पुस्तिका मेंसंक्षिप्त रौशनी डाली गई है। इसलिए इमाम सज्जाद अ. केप्रयासों के कुछ मुरत्य पहलूओं को निम्नलिखितविषयों में देखा जा सकता है।

1.अध्यात्मिक तर्बीयत (दुआओं के द्वारा तर्बीयत)

2.इन्सानी तर्बीयत (गुलामों की तर्बीयत)

3.समाजिक तर्बीयत (फक़ीरों और लाचारों की देखभाल)

4.अधिकारों की पदोन्नीत (रिसालाए हुक़ुक़ के द्वारा तर्बीयत)

इमाम सज्जाद अ. मुसलमानों को नैतिक, आध्यत्मिक, शिक्षा, फिक्री और समाजी ऐतबार से इस मुक़ाम पर ले जाना चाहते थे कि समाज में लोग अपनी ज़िम्मेदारीयों को सँभाल सकें क्योंकि समाज में शिक्षा और धार्मिक ऐतबार से प्रशिस्तिलोग ही समाज की जिम्मेदारीयों को सँभाल सकते हैं। समाज की तामीर–व–तरक़्क़ी और व्यवहारिक प्रगति ऐसे ही लोग कर सकते हैं।

इमाम सज्जाद अ. की सामूहिक कक्षा से अनगिनत लोगों ने फ़ायदा उठाया है। आप अ. की सामूहिक कक्षा में ऐसे आलिम, फुकहाऔर बुजुर्ग दानिश्वर प्रवान चढ़े हैं जो बेमिसल–व–बेनज़ीर हैं।

आख़िर में अल्लाह की बारगाह में दुआगो हूँ कि वो इस किताब को मेरे आमाल–नामे की संगीनी और इस दिन का जख़ीरा करार दे कि जिसमें माल–व–औलादहरगिज़ काम नहीं आएगी, सिवाए ये कि इन्सान क़ल्ब–ए–सलीम के साथ अल्लाह की बारगाह में हाज़िर हो। और बे–शक अल्लाह की ज़ात, उम्मीदों का मर्कज़, आरजुओं का महवर एवं जूद–ओअता और रहमतों का सरचश्मा ळें

अल्लाहुल मुस्तेआन

अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ

अल–हिल्ला अल–क़तीफ

जुमा 7–रमजान 1438 हि.2–जून 2017ई.

अनुवादक के क़लम से

रसूल–ए–अकरम स. की अनथक कोशिशों के बाद जो इन्क़िलाब और तब्दिली अरब और आस–पास के दूसरेक्षेत्रों में आई थी वो ख़ुद में एक मिसाल है। लेकिन आप की आँखें बंद होते ही मुसलमानों के एक बड़े गिरोह में इन्हिराफ–व–इख़तिलाफ सामने आने लगा।

रसूल अल्लाह स. केदेहान्त के बाद इस्लाम में सबसे पहली दरार मसलाए ख़िलाफत पर नुमायां हुई। आँहज़रत अ. ने अपने बाद के लिए अपने जांनशीन और ख़लीफा मुक़र्रर फर्मा दिए थे, लेकिन मुस्लमानों के एक वर्गया गिरोह ने उसे स्वीकार न किया और एक स्थायी सिलसिला ख़िलाफत तैयार कर लिया जिसकीशुरूआत सक़ीफा बनी साअदा से हुई। जहां मुसलमानों के एक गिरोह ने तमाम मुसलमानों के लिए एक ख़लीफा चुन लिया।

पैगंबरे अकरम अ. के उत्तराधिकारी में इख़तिलाफ दर असल मुकम्मल दीन में एख़तिलाफ का सबब होता है क्योंकि ख़लीफाए रसूल अ. और उनका जांनशीन वास्तव में उनके दीन का तर्जुमान और दूत की हैसियत रखता है और ऐसे जांनशीन का चुनाव ख़ुदा–या ख़ुद पैगंबरे अकरम अ. ही कर सकते हैं और इस ख़लीफा–व–उत्तराधिकारी का सिलसिला इल्म–व–दानाई–ए–पैगंबरे ख़ुदा और फिर उसके बाद ख़ुदा की वही और इल्मे लदुन्नी से होता हैताकि दीन को इसी तरह बयान करे जिस तरह अल्लाह ने अपने पैगंबर अ. पर नाज़िल किया है। ऐसे में ख़िलाफत में इख़तिलाफ वास्तव में दीन के सही स्रोत में इख़तिलाफ है और ख़िलाफत में इन्हिराफ दर असल हुसूल–ए–दीन के सही रास्ते में इख़तिलाफ है।

मुस्लमानों ने अपनी इस ग़लती कासुधार नहीं किया और लम्बे समय तक बल्कि आज तक उस का ख़ामियाज़ा भुगत रहे हैं। जबकि अल्लाह

ने सिलसिलाए इमामत व रसूल स.का उत्तराधिकारीसिर्फ इसलिए स्थापित किया था कि मुसलमान सही दीन और सही शरीयत पर चलते रहें। लेकिन एक बड़े गर्व या गिरोह का इन्हिराफ कारण हुआ कि धीरे धीरे मुस्लमानों से तमाम इस्लामी मुल्य व विचार दूर जाते रहें और बाहरीव ग़ैर इस्लामी संस्कृति से इस्लामी समाजप्रभावित होता रहा और आलम ये हुआ कि पहली सदी हिज्री ही में मदीनाए मुनव्वरा जैसे मुकद्दस शहर में नाच–गाना जैसे हराम काम आम होने लगे, ज़माना–ए–जाहिलीयत की तमाम रस्में फिर से जिंदा होने लगीं, फिर से वर्ग प्रणाली और अरब–व–अजम का फ़र्कमुसलमानों के बीच पनपने लगा और न सिर्फ ये कि मुसलमान नमाज़–व–रोज़ा जैसे फ़राइज़ के अहकाम भूलने लगे बल्कि दीन सिर्फ रस्म–व–आदाब की शक्ल में बाक़ी रहने लगा।

चुनांचे ऐसे हालात में दीन का ख़ातमा यक़ीनी था और पूरे तौर पर फिर से इस्लाम कुफ्र में बदल होजाता, तमाम धार्मिक मुद्दे ख़त्म हो जाते, ख़िलाफत–व–इमामत का सिलसिला जो अल्लाह ने अपने नबी के ज़रीएस्थापित किया था वो सीना–सिपर हो कर दीन और तमाम दीनी मुल्यों के लिए एक ढाल के जैसा उसकी हिफ़ाज़त–व–रक्षा करता रहा और इमाम अली अ. से लेकर आख़िरी इमाम तक तमाम इमामों ने अपने ज़माने और हालात के ऐतबार से दीन की हिफ़ाज़त की और दीन को तबाह–व–बर्बाद होने से बचाया और ये इलाही सिलसिला बाद की नसलों तक सही–ओ–सालिम मुंतक़िल किया।

इस सिलसिला में इमाम ज़ैनुल आबेदीन सैय्यदुस साजेदीन अ. का अनोखा और नुमायां किरदार था। आप अ. का दौर वाक़िया कर्बला के बाद एक दुःखद और तबाहकुन दौर से गुज़र रहा था। इस्लाम सिसकियाँ ले रहा था दीनी अक़दार ख़ातमे की कगार पर थे, दौरे जाहिलियत की तमाम आदतें व तरीक़े फिर से पनपने लगीं। लेकिन इमाम सज्जाद अ. ने अपनी समाधान व बुद्विमत्ता के ज़रिए दीने हक़ को फिर से जिंदा किया और फिर से इसी इस्लाम को समाज में पल्टाया

जो रसूल खुदा स. लेकर आए थे। निश्चित तौर पर सिलसिलाए ख़िलाफत–व–इमामत में मुकम्मल तौर पर मुस्लमानों को एकजुट न कर पाए लेकिन दीन की पूंजी–व–मुल्यों को बचा लिया, डूबती मानवता को फिर नया जीवन दे दिया।

इस किताब में इसी विषय पर रौशनी डाली गई है। इस किताब का अरबी से उर्दू में तर्जुमा हुआ है और फिर उर्दू से हिन्दी। अरबी में इस का नाम 'अल–इमामुस सज्जादवल–बनाईल ईन्सानी' जिसका उर्दू और हिन्दी में 'इमाम सज्जाद अ. और इन्सानी तर्बीयत' के नाम से तर्जुमा हुआ है।

इस किताब के लेखक जनाब हुज्जतुल–ईस्लाम वलमुसलेमीन डाक्टर मौलाना अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ हैं। आप सरज़मीने क़तीफ से एक फ़ाज़िल–व–क़ाबिल–ए–क़दर शोधकर्ता व लेखक हैं। आप अलग अलगविषयों पर बहुत सी किताबें और मक़ालात–व–मज़ामीन के लेखक–व–मुसन्निफ हैं। ये किताब आपकी कोशिश–व–क़लम की मान्यता आपके इल्म–व–दानिश और दूरबीन होने की दलील है। इस किताब में निम्नलिखित अहम विषयों की व्याख्या की गई है।

लोगों की लोगों का आध्यात्मिक प्रशिक्षण (दुआओं के ज़रिए तर्बीयत), इन्सान की क़दर–व–मंज़िलत की हिफ़ाज़त गुलामों की तर्बीयत), आर्थिक तरर्बीयत (ग़रीब और तंग–दस्त लोगों की मदद) और अधिकारों की पासदारी(रिसालए हुक़ुक़)

उल्लेखित विषयों इमाम सज्जाद की लोगों की ज़रूरतों और मुश्किलात का हल हैं क्योंकि इमाम सज्जाद ने इन विषयों पर ध्यान इसलिए दिया क्योंकि उन्हें मसाइल के ख़त्म होने के सबब दिन ब–दिन इस समय का समाज पदावनति और ज़वाल की तरफ बढ़ता जा रहा था और इस्लामी मुल्य ख़त्म होते जा रहे थे। जबकि आईम्मा की तारीख़ और जीवन शैलीकारों ने अलग–अलग इन बातों को बयान किया है लेकिन एक

साथ मुनज़्ज़म ऐसे लेख कम हैं। लेखक की ये कोशिश प्रशंसा के क़ाबिल है।

ऐसी किताबों का हमारी ज़बान में भी होना ज़रूरी है और यक़ीनन इस सिलसिले में बुजुर्ग उलेमा ने जगह जगह किताबें लिखी हैं और इस जैसे विषयों पर किताबें या मक़ालात लिखे गए हैं, लेकिन ज़रूरत इस बात की थी कि इस तरह के विषय ज़्यादा विस्तार और ज़माने की ज़रूरतों के पेश–ए–नज़र आसान ज़बान में बयान हों ताकि नयी पीढ़ी उनसे मानूस हो और अइम्मा अ. बिलख़ुसूस इमाम सज्जाद अ. की इस्ट्रेटजी और रणनीति को जानें बुरे से बुरे हालात में रहकर हमारे इमामों ने किस तरह दीन की हिफ़ाज़त की है।

हालांकि वाज़ेह है कि हर ज़बान में तहरीर और बोलचाल का अपना तरीक़ा होता है जो दूसरी ज़बानों से अलग हुआ करता है, इसलिए अनुवाद के दौरान इस बात का लिहाज़ ज़रूरी है कि असल ज़बान से अनुवार होने वाली ज़बान में हु–बहू इबारतों को मुंतक़िल न किया जाये क्योंकि अक्सर सिर्फ लफ़्ज़ी तर्जुमे के सबब अर्थ बिलकुल बेजान होजाता है और या फिर कभी कभी बदल भी जाता है। लिहाज़ा लफ़्ज़ी तर्जुमे से ज़्यादा इस बात का लिहाज़ ज़रूरी है कि अलफ़ाज़ और इबारत की हिफ़ाज़त करते हुए अनुवाद होने वाली ज़बान में बोले जानेवाले मुहावरों का लिहाज़ करते हुए उस का तर्जुमा हो ताकि मफहूम–व–अर्थ और लेखक का मक़सद अदा हो सके।

इस किताब के तर्जुमे में ज़्यादा से ज़्यादा इस बात का लिहाज़ किया गया है। अनुवाद बिल्कुल शाब्दिक–व–रैखिक नहीं है बल्कि ज़रूरत के पेश–ए–नज़र वाक्यों में कमी व ज़्यादती और अलफ़ाज़ की हदों से बाहर मफहूम–व–अर्थ की अदायगी और उर्दू में मौजूद बोल–चाल और तहरीरी तरीक़े का लिहाज़ किया है।

इस जगह पर मैंये ज़रूरी समझता हूँ कि उन तमाम साथियों का तहे दिल से शुक्रिया अदा करूँ जिन्होंने इस तहरीर को प्रकाशित होने के लाएक़ बनाया, विशेष रूप से मौलाना डाक्टर मैहदी बाक़िर खान का शुक्रिया जिनकी साहित्यिक सुधार और नज़र–ए–सानी ने इस किताब को छपने के क़ाबिल बनाया।

इसी तरह इदारा इस्लाह लखनऊ का भी बहुत ज़्यादा आभारी हूँ। इस मोहतरम, क़दीमी, ख़िदमत करने वाले इल्मदोस्त इदारे से इस किताब केप्रकाशन ने इस की अहमियत को और चार चांद लगाए।

अलबत्ता बारगाह अहले बैत अ. में हर कोशिश हक़ीर होती है। लिहाज़ा अपनी तमामतर बे–बज़ाअती का इक़रार करते हुए दुआ है कि बारगाहे ख़ुदा और अहलेबैत अ. में ये कोशिश क़ुबूल हो और लेखक को उनकी इस बहूमुल्य तहरीर का अज्र–व–सवाब में और मुझ हक़ीर को इस के अनुवाद की जज़ा मिले।

अलअहक़र

मिर्ज़ा असकरी हुसैन (मुक़ीम कुवैत)

6–जमादिल अव्वल1442 हि., 21–दिसम्बर 2020 ई0

हदिया

हम अपनी इस हक़ीर कोशिश को

अंबिया–ओ–मुर्सलीन–व–अइम्माए ताहेरीन अलैहिमुस्सलाम

और

बिलख़ुसूस हज़रत हुज्जत इबनुल–हसन साहिबुल–अस्र–व–ज़मान अज.

की ख़िदमत में पेश करते हैं

और दुआ है कि आपकी बारगाह में ये हदिया कुबूल हो

इमाम सज्जाद अ0 आर दुआओं के द्वारा तर्बियत

मुकद्दमा

अल्लाह तअला ने कुरआन–ए–मजीद में बहुतजगहों पर अपने बंदों को दुआ मांगने का हुक्म दिया है। यहां पर कुछ आयात देखी जा सकती हैं, इरशाद होता है:

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ सूरह ग़ाफिर आयत–60

(और तुम्हारे परवरदिगार ने कहा, मुझे पुकारो मैं जवाब दूँगा)

इरशाद होता है :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

सूरह बक़रा आयत–186

''और जब मेरे बंदे आपसे मेरे बारे में पूछें तो (कह दीजीए कि)मैं(उनसे)करीब हूँ। पुकारने वाले को जवाब देता हूँ, तो वो मेरी आवाज़ पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान लाएं शायद कि वो हिदायत मिल जाएं''

और अल्लाह ने इस बात की जमानत दी है कि इख़लास–ओ–यक़ीन के साथ जो कोई भी उसकी बारगाह में दुआ मांगे, अल्लाह कुबूल करेगा। अतः एक मोमिन के लिए ज़रूरी है कि बारगाहे खुदावंदी में दुनिया–व–आख़िरत की तमाम ज़रूरत को तलब करे।

दुआ की एहमीयत–व–फज़ीलत की इकाई में अनगिनत और लगातार रवायात हैं, जिनसे दुआ की अज़मत दुनिया–व–आख़िरत की तमाम ज़रूरतें पूरी होने में दुआ का किरदार नुमायां होता है ।

इसलिए रसूल–ए–ख़ुदा से रिवायत है कि 'दुआ इबादत की रूह है'।

(मुस्तदरकुल वसाएल, तबरेसी जिल्द 5, पेज 168, ह 5576)

या दूसरी रिवायत में इरशाद फरमाते हैं 'दुआ मोमिन का असलाह, दीन का सुतून और ज़मीनों और आसमानों का नूर है।

(उसूले काफी, शेख़ किलीनी जिल्द2, 439 न 1)

या वो रिवायत जिसमें आप फरमाते हैं ''अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ से ज़्यादा बाअज़मत–व–मोहतरम कोई चीज़ नहीं है''।

(बेहारुल अनवार, अल्लामा मजलिसी जिल्द 90, पेज 294, ह23)

रसूल अकरम स0 से रिवायत है कि ''क़ियामत के दिन, अमल में हर ऐतबार से ज़ाहिरी तौर पर एक जैसे दो लोग स्वर्ग में एक साथ प्रवेश होंगे, उनमें जब एक को, दूसरे पर श्रष्ठता दी जाये तो वो बारगाहे ख़ुदा में सवाल करेगा बारे इलाहा अमल के ऐतबार से हम दोनों एक जैसे थे, लेकिन अज्र में ये फ़र्कक्यों? तो आवाज़ आएगी वो मुझसे दुआ मांगता था और तुम मेरी बारगाह में दुआ नहीं करते थे।

फिर आँहज़रत स0 ने फरमाया अल्लाह की बारगाह से बहुत ज़्यादा माँगो, क्योंकि अल्लाह के लिए कोई भी चीज़ बड़ी नहीं होती ।

(बेहारुल अनवार, अल्लामा मजलिसी जिल्द 90, पेज 302, ह39, वसाएलुशशिया, अल हुर्रे आमली जि.7 पे 24, र 8605)

इस सिलसिला में हज़रत अमीरुल–मोमेनीन अलैहिस–सलाम से रिवायत है कि 'रूए ज़मीन पर अल्लाह के नज़दीक सबसे पसंदीदा अमल दुआ है''।

(वसाएलुशशिया, अल हुर्रे आमली जि.7 पे 31, र 8628)

इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस–सलाम ने फरमाया 'हमेशा दुआ किया करो, क्योंकि दुआ में हर बीमारी की शिफा है''।

(उसूले काफी, शेख़ किलीनी जिल्द2, पे470 न 1)

मुआवीया इबने अम्मार कहते हैं मैंने इमाम जाफर सादिक़ अ0 से कहा मौला कुर्बान जांऊ आप पर, मेरी सकल ये है कि दो लोग एक साथ मस्जिद में दाख़िल होते हैं और एक नमाज़ में और दूसरा दुआ में व्यस्त हो जाता है, इन दोनों में श्रेष्ठ कौन है? इमाम अ0 फरमाते हैं कि दोनों ही श्रेष्ठ हैं। इब्ने अम्मार फरमाते हैं मौला वो तो मैं जानता हूँ लेकिन इन दोनों में कौन ज़्यादा श्रेष्ठ है।

इमाम अ0 ने फरमाया जो ज़्यादा दुआ मांगे। तुम्हें मालूम होना चाहीए कि इस श्रेष्ठता की वजह, अल्लाह का वो हुक्म है जिसमें इरशाद होता तुम मुझसे दुआ माँगो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा।

(सूरह ग़ाफिर आयत–60, मजमाउल बयान फी तफसीरुल कुरआन अल्लामा तबरेसी जिल्द 8, पेज 823)

और इसी तरह दूसरी तमाम रिवायात, दुआ की बरतरी और इस की फज़ीलत पर बेहतरीन गवाह हैं। उनसे ये साबित होता है कि दुआ इबादतों में सबसे बरतर है। लिहाज़ा अईम्मा अ0 से नक़्ल दुओं को पढ़ना और उनके अर्थ में ग़ौर–व–फ़िक्र करना बेहद ज़रूरी है उनके बयान से ज़्यादा से ज़्यादा परिचय और उनके तरबीयती, आध्यात्मिक और नैतिक बातों का गहराई के साथ अध्ययन ज़रुरी है।

सहिफ़ए सज्जादिया
और दुआओं से तरबीयत

सैय्यदे सज्जाद इमाम अली इब्नुलहुसैन अ0 ने दुओं की शक्ल में मुस्लमानों के लिए अमुल्य ख़ज़ाने छोड़े हैं। आप की दुआएं अक़ाएद और अख़लाक़ी–व–फिक्री तरबीयत की इकाई में अहम और बेहद गहरे विषयों को बयान करती है।

इमाम सज्जाद अ0 ने दुआ को तरबीयत का बेहतरीन वसीला बनाया और दुओं के सहारे ऐसे ऊलेमा, फुकहा, रावी, मुहद्दिसीन और मुफस्सिरीन की तर्बीयत की है जो अख़लाक–व–फज़ाइल में मुमताज़ हैसियत रखते थे। आप अ0 की इस प्रशिक्षण केंद्र में ऐसी शख़्सियतों ने प्रशिक्षण पायी है जो ज्ञान और बुद्विमत्ता के अद्वुकुल थे। और अलग अलग इस्लामी शिक्षाओं में महारत के कारण प्रसिद्व थे।

सहीफाए सज्जादिया जो इमाम सज्जाद अ0 की दुओं का मजमूआ है, सिर्फ बारगाहे ख़ुदा में मुनाजात, उस के हुज़ूर में राज़–व–नियाज़ और रोने का मजमूआ नहीं है, बल्कि इस किताब में ऐसे ऐतिक़ादी, अख़लाकी, समाजी और तरबीयती मसाइल हैं जो इल्म–व–मारेफत का ख़जाना हैं।

सहीफाए सज्जादिया की अज़मत–व–अहमियत के लिए यही काफी है कि इस किताब पर बेशुमार मूलयांकन लिखे गए जलील–उल–क़दर मुहक्किकहज़रत आक़ाए बुज़ुर्ग तेहरानी ने अपनी किताब ''अलज़रीयाइला तसानीफीश शिया'' में इस किताब पर कई शरहें जिक्र की है।

सहीफा सज्जादिया एक तरबीयती प्रकाशन होने के साथ ऐसे नैतिक, अध्यात्मिक और माअनवी मआरिफ पर शामिल है जो उच्य नैतिक और माअनवी कमालात तक पहुंचने के लिए मशअले राह हैं।

इमाम सज्जाद अ0 ने दुआओं के ज़रीए समाज में (अख़लाक़ी तबाहियों का मुक़ाबला और ख़त्म करने के लिए पहले ऐसे शागिर्द तैयार किए जो समाजिक सुधार और बुराईयों को दूर करने में इमाम अ0 की मदद कर सकें।

सहीफाएसज्जादिया की अहमीयत के लिए इतना ही काफी है कि उसे ''जुबूरे ऑले मोहम्मद अ0'' भी कहा जाता है। अरबी फसाहत–व–बलाग़त में नहजुल बलाग़ा के बाद इस किताब को सबसे अहम किताब जाना जाता है, इतना ही नहीं बल्कि अपने ज़माना के मशहूर–व–मारूफ मराजाए तक़लीद हज़रत आयतुल्लाह मरशी नजफी ने इसकंदरीया के मारूफ मुफ्ती, अहले सुन्नत के बुजुर्ग आलिम, साहिबे तफसीर तनतावी को सहीफाएसज्जादिया का एक नुस्ख़ा भेजा तो उन्होंने सिपास–ओ–शुक्रिया के बाद जवाब में कुछ इस तरह लिखाः

''हमारी ये बदक़िस्मती थी कि हम सिलसिलाए नुबुव्वत के इस अज़ीम सरमाया से अब तक महरूम रहे। मैंने जितनी बार भी इस किताब को पढ़ा, मुझे कलाम ख़ालिक़ से कम और कलाम मख़लूक से बरतर लगा''

सहीफा सज्जादिया सत्तर(70) से अधिक दुओं पर शमिल है। यहां उनके उनवानात देखे जा सकते हैं

1.हमद इलाही

2.रसूल अकरम स0 पर दुरूद–ओ–सलाम

3.हामिलाने अर्श पर दुरूद–ओ–सलाम

4.अंबियापर ईमान लाने वालों पर दुरूद वसलाम

5.अपने लिए और अपने दोस्तों के लिए दुआ

6.सुबह वशाम की दुआ

7.मुश्किलात के वक़्त की दुआ

8.इस्तेआज़ा–ए–ख़ुदा की दुआ

9.तलब–ए–मग़फ़िरत की दुआ

10.पनाहे ख़ुदा की दुआ

11.आक़िबत बख़ैर होने की दुआ

12.ऐतराफे गुनाह और तलब–ए–तौबा की दुआ

13. तलब–ए– हाजात की दुआ

14.ज़ालिमों से बचने की दुआ

15. मरज़ दूर करने की दुआ

16.अफव–ओ–दर गुज़श्त की दुआ

17. शर्रे शैतान को दूर करने की दुआ

18. बलाओं को दूर करने की दुआ

19.बारिश की दुआ

20.पाकीज़ा अख़लाक से संवारने की दुआ

21.दुखः व दर्द के मौक़े पर दुआ

22.शिद्दत–ओ–सख़ती के वक़्तदुआ

23.तलब आफियत की दुआ

24. वालिदैन के हक़ में दुआ

25.औलाद के हक़ में की दुआ

26.पड़ोसियों और दोस्तों के लिए दुआ

27.सरहदों के मुहाफ़िज़ों के लिए दुआ

28.अल्लाह से गिड़गिड़ाने की दुआ

29.तंगी–ए–रिज़क़ के मौक़े पर दुआ

30.अदाए क़र्ज़ की दुआ

31.दुआए तौबा

32.नमाज़े शब के बाद की दुआ

33.दुआए इस्तिख़ारा

34गुनाहों की रुस्वाई से बचने की दुआ

35.रज़ाए इलाही पर ख़ुश रहने की दुआ

36.बिजली कड़कने के वक़्त की दुआ

37.अदा–ए–शुक्र में कोताही की दुआ

38.उज़रो मग़फिरत की दुआ

39.तलबे अफव–ओ–रहमत की दुआ

40.मौत को याद करने के वक़्त की दुआ

41.पर्दापोशी–ओ–निगहदाशत की दुआ

42.दुआए ख़त्मे कुरआन

43.दुआएरुयते हिलाल

44.इस्तिक़बाले माहे रमज़ान की दुआ

45.विदा माहे रमज़ान की दुआ

46.ईदैन और जुमा की दुआ

47.रोज़े अर्फा की दुआ

48.ईदे कुर्बान और जुमा की दुआ

49.दुश्मन के मकर–ओ–फरेब से बचने की दुआ

50.ख़ौफे ईलाही में दुआ

51.आजिज़ी–ओ–नातवानी में दुआ

52.तज़र्रे–व–इलहा में दुआ

53.आजिज़ी–व–फिरौतनी में दुआ

54.ग़म–व–अंदोह के दूर होने की दुआ

55.तस्बीह की दुआ

56.हमद की दुआ

57.ऑले मोहम्मद अ0 को याद करने की दुआ

58.जनाबे आदम अ0 पर दरूद

59.सख़तियों से नजात की दुआ

60.ख़ौफ–ओ–हिरास से बचने की दुआ

61.आजिज़ी–व–फिरोतनी की दुआ

62. इतवार की दुआ

63.सोमवार के दिन की दुआ

64.मंगल के दिन की दुआ

65.बुध के दिन की दुआ

66.बृहस्पतिवार की दुआ

67.शुक्रवार के दिन की दुआ

68.सनीचर की दुआ

69.मुनाजाते ख़मसाअशर

इमाम सज्जाद अ0 जिन दुओं को दिन व रात पढ़ा करते थे, वो वास्तों में आप के प्रशिक्षण, नैतिक धारण और सांस्कृतिक क़ानून हैं जिन्हें आप ने दुओं के ज़रीए समाज की फिक्री, कार्यों और नैतिक प्रशिक्षण के एक सिलेबस के तौर पर पेश किया है।

महत्वपूर्ण यह है कि हम दुआओं के इस संग्रह को सिर्फ पढ़ने तक महदूद न रखें, बल्कि उस की उपयोगिता का तक़ाज़ा ये कि हम उस के विषयों का गहरा अध्ययन करें और उनके अवधारणाओं में विचार करें।

दुआएं, एक मुस्लमान की अध्यत्मिक और माअनवी तरक़्क़ी और इस के तरबीयत–ए–नफस का बेहतरीन रास्ता हैं।

अतः इन्सान की जिंदगी में दुओं की अहमीयत के पेश–ए–नज़र इस किताब के विषयों को निम्नलिखित अनुक्रम से पेश किया गया है।

1.दुओं के ज़रीए तरबीयत की इकाई में कुछ मुल्य अंक।

2.दुआओं के–प्रभाव व फ़ाएदे

3.दुआओं के कुबूल होने की शर्तें

4.दुआओं के कुबूल होने में रुकावटें

5.आख़िर में कुछ मुस्तेजाब दुआओं के नुस्ख़े

दुआ के आसार

अल्लाह ने अपनी किताब में लोगों को दुआ का हुक्म दिया है।

اُدْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ(सूरह ग़ाफिर आयत–60,)

इरशाद होता है अल्लाह ने दुओं के कुबूल करने का वादा किया है,लिहाज़ा एक मोमिन का कर्तव्य है कि वो अपनी दीनी और दुनियावी ज़रूरतों के लिए बारगाह ख़ुदा में दुआ करे।

दुआ के अनगिनत प्रभाव व फ़ाएदे हैं जिनमें से कुछ को यहां देखा जा सकता है

1. दुआ अब्दो माबूद के दरमियान में संपर्क का ज़रीया है। बंदा दुआओं के ज़रीए परवरदिगार से अपने गुनाहों और ख़ताओं की माफी मांगता है और दुआ, ख़ुदावंदे मुतआल की रहमत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है क्योंकि अल्लाह अपने बंदों पर बहुत रहम करने वाला है।
2. दुआ इन्सान के अंदर रूहानियत और माअनवियत को बढ़ावा देती है। दुआ के ज़रिए इन्सान माअनवी और रुहानी ऐतबार से पुख़ता–व–मज़बूत होता है, ख़ासकर वो दुआएं जो इमामों से मरवी हैं उनका ख़ास असर होता है, क्योंकि ये दुआएं बारगाहे ख़ुदा में ख़ुशू–ओ–ख़ुज़ू और तस्लीम–ओ–तज़लील का बेहतरीन मजमून है।
3. दुआओं के ज़रिए इन्सान अपनी दुनिया और आख़िरत की हाजतों को मांगता है ।

चुनांचे इरशादे परवरदिगार होता है:

اَدْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ(सूरह ग़ाफिर आयत–60,)

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

(सूरह बक़रा अ.186)

4. दुआ से इन्सान की आत्मा को ज़िन्दगी मिलती है, इस की ज़बान से दिल में पाकीज़गी आती है, इससे रुहानी ज़ौक और इसकी फिक्र को सेहत मिलती है नीज इन्सान, अल्लाह से बात करने का तरीक़ा सीखता है।
5. इमामों से मनकुल दुओं में ऐसे अमीक़–ओ–बलीग़, ऐतिक़ादी, अख़लाक़ी और आत्मा की पवित्रता से मुताल्लिक़ मज़ामीन हैं जिनको लगातार पढ़ना कारण होता है कि वो मफाहीम इन्सान के वजूद का हिस्सा बन जाएं।
6. दुआएं तज़किया नफस, इच्छा के संयम और आत्मा को अख़लाक़ी बुराईयों से दूर रखने एवं अच्छी आदतों के सीखने और आला अख़लाक़ को हासिल करने का ज़रिया है।

इस्तिजाबत की शर्तें

दुआओं के कुबूल होने और इसके फ़ाएदे–व–प्रभाव के ज़ाहिर होने की कुछ शर्तें हैं, जिनके बग़ैर दुआएं कुबूल नहीं होतीं। यहां दुआओं के कुबूल होने की कुछ शर्तें देखने के लाएक़ है।

1. ख़ुदा की पहचानः दुआ से पहले ख़ुदा की सही पहचान ज़रूरी है, क्योंकि बगैर पहचान के दुआ का कोई अर्थ नहीं है। इमाम काज़िम अलैहिस–सलाम फरमाते हैं, इमाम सादिक़ अलैहिस–सलाम की ख़िदमत में कुछ लोगों ने कहा हम दुआ करते हैं लेकिन हमारी दुआ कुबूल नहीं होती।आप ने फरमाया क्योंकि तुम लोग जिसकी बारगाह में दुआ मांगते हो, उस की पहचान नहीं रख़ते हो(बेहारुल अनवार, अल्लामा मजलिसी जिल्द 90, पेज 368) लिहाज़ा अल्लाह की मारेफत रखने वाले की दुआ और मारेफत न रखने वाले की दुआ में बहुत फ़र्क़होता है।

2. अल्लाह के अहकाम पर अमल :दुआ के कुबूल होने की दूसरी अहम शर्त, अल्लाह के अहकाम पर अमल और इस के मुहर्रमात से दूरी है। वाजिबात (जिन चीज़ों का हुक्म दिया गया है) की अदायगी और मुहर्रमात (जिन चीज़ों मना किया गया है) से दूरी दुआओं के मुस्तजाब होने की बुनियादी शर्त है। लिहाज़ा वो शख़्स जो लगातार गुनाहों की तकरार करता है और अल्लाह के अहकाम का विरोध और मासियत में ग़र्क़होता है, उसकी दुआएं कुबूल नहीं होतीं। इमाम अली अ0 फरमाते हैं ''बगैर अमल के दुआ करने वाले की मिसाल उस तीर–अंदाज की है जो बगैर कमान के तीर चलाए। (नहजुलबलाग़ा जि.4, पे.740,र. 338,अलख़ेसाल शेख़ सुदूक़ पे.621)

3. दिली झुकाव रुजहान :दुआ के समय इन्सान का दिल–व–जान से अल्लाह की बारगाह में मुतावज्जेह होना दुआओं के कुबूल होने की एक बुनियादी शर्त है, अतः लापरवाही में डूबे इन्सान की दुआएं कुबूल नहीं होतीं।

रसूल अकरम स0 का इरशाद है कि 'अल्लाह लापरवाह दिलों की दुआएं कुबूल नहीं करता (वसाएलुशशिया, हुर्रे आमली जि.7 पे.53, र 8701)

दूसरी हदीस में इरशाद होता है ''दुआएं मांगते वक़्त, गिड़गिड़ा कर रोने को मुनासिब समझो कि वो अल्लाह की रहमत है'' (बेहारुल अनवार, अल्लामा मजलिसी जिल्द 90, पेज 313)

मौला अली अ0 फरमाते हैं कि ''लहवो लहब (खेल कूद) में डूबे दिल की दुआएं कबूल नहीं होतीं''(बेहारुल अनवार, अल्लामा मजलिसी जिल्द 90, पेज 314, ह.19)

इमाम सादिक़ अ0 फ़रमाते हैं कि ''अल्लाह लापरवाह दिलों की दुआएं कुबूल नहीं करता, जब भी दिल से दुआ करो तभी कुबूलीयत को यक़ीनी समझो। (उसूले काफी जि.2, पे.444, ह.1)

इसलिए हमें चाहिए कि बारगाहे ख़ुदा में दिल की गहराई (दिल से) के साथ दुआ मांगें ताकि हमारी दुआएं पूरी हो सकें।

4. हलाल रोज़ी : हलाल रोज़ी की तलाश और अपने परिवार के लिए हलाल रोज़ी कमाना बेहतरीन इबादत है। इन्सान के हलाल रिज़क़का उसकी आत्मा–व–कामों परअसर होता है। इन्सान की अगर रोज़ी हलाल हो तो उस की दुआएं भी कुबूल होती हैं।

रसूल अकरम स0 फरमाते हैं ''जो अपनी दुआएं कुबूल करवाना चाहता है उसे अपनी कमाई को हलाल रखना चाहिए'' (बेहारुल अनवार, जिल्द 90, पेज 372)

इमाम सादिक अ0 फरमाते हैं ''अगर तुम में से कोई ये चाहता है कि उसकी दुआ कुबूल हो, तो वो अपनी कमाई को हलाल रखे और लोगों का हक़ मारने से बचे, क्योंकि अल्लाह उस इन्सान की दुआ कुबूल नहीं करता कि जिसकी रोज़ी हराम हो और या उस के ऊपर किसी का हक हो।''(बेहारुल अनवार, जिल्द 90, पेज 372)

5. दुआ कैसे मांगेः दुआ के कुबूल होने की एक शर्त ये भी है कि इन्सान दिल की गहराई के साथ दुआ मांगे।

कुरआन–ए–मजीद में इरशादे परवरदिगार है:هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ(सूरह ग़ाफिर आयत 65)''वो ज़िन्दा है और इस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की बारगाह में इख़लास के साथ दुआएं करो और उसी के अख़तियार में रोज़े जज़ा है'।

दूसरे ये कि दुआ अकेले में टूटे दिल के साथ होना चाहिए। इरशाद होता है:ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً(सूरह आराफ आयत–55)'' और अपने परवरदिगार को टूटे दिल के साथ अकेले में पुकारो''।

और दुआ ख़ौफ–व–उम्मीद के साथ होनी चाहिए।

अतः इरशाद होता है : وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا (सूरह आराफ आयत–56)

''और अपने परवरदिगार की बारगाह में ख़ौफ–व–उम्मीद के साथ दुआ करो''

6. मुनासिबवक़्त :इन्सान किसी भी वक़्त अल्लाह की बारगाह में दुआ मांग सकता है, लेकिन कुछ मौकों पर दुआओं के कुबूल होना ज़्यादा संभव है, जैसेजुमे के दिन, रोज़े अरफा, शब–ए–क़द्र, बारिश के वक़्त, नमाज़ के बाद, वक़ते सहर और

तलूए फ़ज्र से तलूए अफताब के दौरान आदि, ये वह मवाक़े हैं जिनमें दुआएं क़ुबूल होती हैं। मौलाए कायनात फ़रमाते हैं चार मौकों पर दुआओं से कभी भी न चूकना कुरआन–ए–मजीद पढ़ते समय, अज़ान के समय, बारिश के समय और इस्लाम–व–कुफ्र की दो सफें जब एक दूसरे से जंग के लिए एक दूसरे के सामने हों। (उसूले काफी जि.2, पे.477, र. 3)

सकूनी ने इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 से और उन्होंने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार से रिवायत की है कि ''पाँच मौक़ों पर दुआएं मांगा करो : कुरआन–ए–मजीद पढ़ते समय, अज़ान के समय, बारिश के समय, इस्लाम–व–कुफ्र की दो सफें जब एक दूसरे से जंग के लिए आमने सामने हों और किसी उत्पीड़ित की पुकार के समय कि जब उसकी आवाज़ और अल्लाह के दरमियान कोई चीज़ रूकावट नहीं होती। (अमाली शेख़ सुदूक़ पे.327, र. 393, वसाएलुशशिया जि.2,पे.65, र. 8739)

इस्तिजाबत (क़ुबूलियत) में रुकावटें

दुआओं के क़ुबूल न होने के भी कुछ कारण हैं जो दुआओं के क़ुबूल होने में रुकावटों का कारण होते हैं।

1. गुनाह : अल्लाह की तरफ़ से हराम किए गए कामों को करना, उसकी आज्ञा का बार बार उलंघन करना, और तौबा भी न करना, दुआओं के मुस्तजाब न होने का कारण है। मौलाए कायनात फ़रमाते हैं ''अपनी दुआओं के कबूल न होने पर हैरान न हो, जबकि अपने गुनाहों के ज़रिए तुमने क़ुबूल होने के रास्ते बंद कर रखे हैं। (अयूनुल हकम वल मवाएज़ पे. 524, मीज़ानुल हिक्मा मोहम्मद री शहरी जि. 3, पे. 884)

2. दूसरों पर उत्पीड़नः अल्लाह के बंदों पर उत्पीड़न, बेगुनाह लोगों को पीड़ा, अपने रिश्तेदार, घर वाले, औलाद, मां बाप और दूसरे सम्बंधित पर उत्पीड़न दुआओं के कुबूल होने में रुकावट का कारण हैं।

इमाम अली अ0 फरमाते हैं : जो शख़्स उत्पीड़न करने वाले से नज़र अन्दाज़ करे, अल्लाह उस पर ऐसे को थोप देता है जो इस पर उत्पीड़न करे, और उसकी दुआओं को भी कुबूल नहीं करता, और न ही इस मज़लूमियत के सबब उसे अज्र–व–इनाम देता है। (वसाएलुशशिया जि. 16,पे.56, र. 20966)

3. अच्छे कामों का हुक्म देना ओर बुराई से रोकने को छोड़ देनाः समाज में उत्पीड़न और बुराईयों को आम करने वालों के विरूद्व ख़ामोशी और गुमराही को फैलाने वालों के सामने ख़ामोशी, दुआओं के कुबूल होने में एक महत्वपूर्ण रुकावट है।

निजी ज़रूरतों की तरह समाजी मसाएल–व–मुश्किलात के लिए भी दुआएं होनी चाहिऐं। समाज अगर किसी मुश्किल या आफत में पीड़ित होतो उसे दुआ का सहारा लेना चाहीए, ताकि अल्लाह समाज से इस मुश्किल को दूर करे। बेशक ये तय है कि अगर समाज में अमर बिलमारुफ और नही अनिलमुनकर की ज़िम्मेदारी को छोड़ दिया जाने लगे तो दुआएं कबूल नहीं होती हैं।

रसूले अकरम स0 इरशाद फ़रमाते हैंः नेकी के बारे में बताना और बुराई से रोकना अगर तुमने छोड़ दिया, तो अल्लाह बुरे लोगों और ज़ालिमों को तुम पर थोप देगा, फिर नेक और बच्छे किरदार लोगों की दुआएं भी कुबूल नहीं होगी।

(बेहारुल अनवार, जिल्द 90, पेज 378, र.2)

4. हराम खाना :इन्सान की रोज़ी या उस का व्यापार या रोज़गार हराम वनाजायज हो, जैसे नशीली चीजों का व्यापार, छीना और चोरी के माल को अपनाना और या फिर नाहक़लोगों के माल पर क़ब्ज़ा करना वगैरा, तो ऐसे इन्सान की दुआएं कुबूल नहीं होती हैं।

रिवायत है कि जनाबे मूसा अ0 ने एक शख़्स को देखा कि वो बहुत ज़्यादा गिड़गिड़ा बिलबिला कर अल्लाह की बारगाह में दुआ कर रहा है, अल्लाह ने जनाबे मूसा अ0 पर वही की कि जिस क़दर भी ये इन्सान रो रो कर और तज़र्रो करे मैं हरगिज़इसकी दुआ को कुबूल नहीं करूँगा क्योंकि इसके पेट, इसकी कमाई और इस का घर हराम से भरा हुआ है। (महजुद्दावात पे.24,ह.34, बेहारुल अनवार, जिल्द 90, पेज 372, र. 14)

इसलिए हराम खाना, हराम की कमाई, हराम माल से घर को बनाना एवं हराम की कमाई से खाने–व–पीने की चीजों का इस्तिमाल इन्सान के दिल को मुर्दा और स्याह करता है और नतीजे में इन्सान की दुआ कुबूल नहीं होती है।

5. मसलेहते ख़ुदा : कभी कभी मसलेहत के कारण दुआ कबूल नहीं होती है क्योंकि ये अल्लाह ही जानता है कि कब किस वक़्त मोमिन को क्या देने में उसकी भलाई है, और अगर मसलेहत न हो तो अल्लाह बंदों की दुआएं रद्द भी करता है, और ऐसे मौक़ों पर बिलकुल ऐसा नहीं है कि दुआ बताए गए कारण और रुकावटों के सबब रद्द हो रही है बल्कि मसलेहत के कारण इस बात की आवश्यकता होती है कि अल्लाह अपने बंदे की दुआ कबूल न करे।

इसहाक़बिन अम्मार कहते हैं, मैंने इमाम सादिक़ अ0 से पूछाः

मोमिन की दुआ कबूल तो होती है लेकिन क्या कबूलीयत में देरी भी होती है

इमाम अ0 ने फरमायाः हाँ, कभी कभी दुआएं बीस साल तक कुबूल नहीं होतीं।

(बेहारुल अनवार, जिल्द 90, पेज 375, र.16)

मक़बूल दुआएं

1.नेक और बदकिरदार औलाद के लिए बाप की दुआ या बद्दुआः

इमाम सादिक अ0 फ़रमाते हैं कि तीन दुआएं हरगिज रद्द नहीं होती हैं

नेक औलाद के लिए बाप की दुआ और बदकिरदार औलाद के लिए उसकी बद्दुआ, उत्पीड़ित करने वाले के हक़ में पीड़ित की बद्दुआ और पीड़ित की मदद करने वाले के हक़ में पीड़ित की दुआ, कभी भी रद्द नहीं होती। ((वसाएलुशशिया, हुर्रे आमली जि.7 पे.130)

मां बाप के साथ नेकी और अच्छे सुलूक़ के अनगिनत तरीक़े हैं। उनमें सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण उनके लिए दुआ है।

2.उत्पीड़ित करने वाले के लिए पीड़ित की बद्दुआ :

रसूल अकरम अ0 फ़रमाते हैं कि पीड़ित की दुआ कभी रद्द नहीं होती।

आप फ़रमाते हैं पीड़ित की आह से डरो, क्योंकि पीड़ित जब अल्लाह की बारगाह में अपने हक़ के लिए पुकारता है तो अल्लाह इसे रद्द नहीं करता। (कन्जुल अम्माल जि. 3, पे. 499, ह.7597)

आप फ़रमाते हैं कि पीड़ित की बद्दुआ से डरो क्योंकि उस की आह बिजली से ज़्यादा तेज़ अल्लाह की बारगाह में पहुँचती है।(कन्जुल अम्माल जि.3, पे.499, ह.7601)

इमाम अली अ0 से किसी ने सवाल किया ज़मीन–व–आसमान के बीच कितनी दूरी है? आपने फ़रमाया ज़मीन–व–आसमान के बीच दूरी सीमा निगाह और मज़लूम की पुकार भर की दूरी फासिला है। (बेहारुल अनवार, जिल्द 55, पेज 93, ह.14)

3. मोमिन की मोमिन के हक़ के लिए दुआः

मक़बूल–व–मुस्तजाब दुआओं में से एक दुआ, एक मोमिन की दूसरे मोमिन के लिए दुआ है, ख़ासकर ऐसे इन्सान के लिए दुआ जो मौजूद न हो, अल्लाह ऐसी दुआ कुबूल करता है, क्योंकि ऐसे इन्सान के लिए दुआ में ज़्यादा सच्चाई होती है जो सामने हाज़िर न हो, और अल्लाह ऐसी दुआ कुबूल करता है। इमाम सादिक़ अ0 फरमाते हैं एक मोमिन की दूसरे मोमिन के लिए दुआ करने से बलाऐं दूर होती हैं और रोज़ी या रोज़गार में ज़्यादती होती है।(बेहारुल अनवार, जिल्द 71, पेज222,र.)

4. ज़्यादा से ज़्यादा कुरआन पढ़ने वाले की दुआ :

ज़्यादा से ज़्यादा कुरआन–ए–मजीद पढ़ने वाले की दुआ हर समय पर कुबूल होती है। हज़रत अमीरुल–मोमेनीन अ0 फरमाते हैंः

चार समय पर हरगिज़ दुआ न छोड़ना कलामे पाक पढ़ने के बाद.... (उसूले काफी, जिल्द 2, पेज 277, र.3)

हर मोमिन को चाहिए कि वो अहले बैत अ0 से नक़्ल होने वाली दुआओं का लगातार पढ़ा किया करे क्योंकि अहले–बैत अ0 से नक़्ल होने वाली दुआओं में ऐसे बलन्द अख़लाक़ी और तरबीयती सब्जेक्ट हैं जिनसे इन्सान के नैतिकता और आध्यात्मिकता में निखार आता है।

इमाम सज्जाद अ0

और गुलामों का प्रशिक्षण

सदियों से इन्सानों के दरमियान गुलामी का सिलसिला रहा है, जिसमें एक इन्सान दूसरे इन्सान का मालिक होता था और ये सिलसिला इस्लाम से पहले और बाद भी बीसवीं सदी तक जारी रहा है ।

इस्लाम ने गुलामी के सिलसिले को दो महत्वपूर्ण तरीक़ों से ख़त्म किया है

पहला तरीक़ाः इस्लाम में गुलामों को आजाद करना बहुत बड़ा काम है और बारगाहे खुदा में क़रीबी का एक बेहतरीन रास्ता है। इस्लाम में गुलामों की आजादी बहुत से गुनाहों का बदला है जैसे रमज़ान के महीने में जान–बूझ कर रोज़ा तोड़ना, नज़र–व–क़सम तोड़ना, किसी मोमिन का गैर इरादतन क़तल वग़ैरा वो गुनाह हैं जिन पर गुलामों को आजाद करना बदल है।

दूसरा तरीक़ा : वो तमाम काम जिनके कारण एक इन्सान दूसरे इन्सान की गुलामी में जाये, इस्लाम में मना हैं। जंग में क़ैद हुए लोगों के अलावा, वो तमाम रास्ते जिनके कारण एक इन्सान दूसरे इन्सान का गुलाम हो, इस्लाम ने इस पर रुकावट लगाई और उसे मना कर दिया। और क्योंकि कुफ्फार–व–मुशरिकीन जंगों में मुस्लमानों को क़ैद करने के बाद उनके साथ गुलामों और क़नीजों का व्यवहार करते थे, अतः इस्लाम ने भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा उन्होंने मुस्लमानों के साथ किया। हालांकि इस्लाम ने फिदया और मुआवज़े के ज़रिए गुलामों की आजादी का सिलसिला जारी रखा।

इरशाद परवरदिगार होता है: فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا (सूरह मोहम्मद आयत न0 4)

"पस जब कुफ्फार से मुक़ाबला करो तो उनकी गर्दनें उड़ादो और यहां तक कि जब जख़्मों से चूर हो जाएं तो उनकी मुश्कें बांध लो फिर उसके बाद चाहे एहसान करके छोड़ दिया जाये या फिदया (आज़ादी से पहले ली जाने वाली राशि) ले लिया जाए यहां तक जंग ख़त्म हो जाए।"

अतः इस्लाम ने एक तरफ गुलामों की आज़ादी की तरवीज की और दूसरी तरफ़ इन्सानों की व्यापार से बहुत ज़्यादा नफरत–व–कराहत का इज़हार किया है।

इमाम और गुलाम

इस्लाम से पहले क़ौमों और कुछ अरसे तक मुस्लमानों के बीच भी गुलामों को ख़रीदने और बेचने का रिवाज था। गुलामों का ख़रीदना–व–बेचना एक आम बात थी। लोग गुलामों को अपने घरों में सेवा करने के लिए ख़रीदा करते थे। मालदारों और सरमायादारों के बीच इस चीज़ ज़्यादा रिवाज था।

इमाम सज्जाद अ0 के काल में मुस्लमानों के बीच गुलामों की ज़्यादती थी। ग़ैर मुस्लिम देशों पर जीत के कारण मुस्लमानों की सरहदों के साथ क़ैदियों और गुलामों की तादाद में भी बढ़ोत्री हुई थी। इतिहास लिखने वाले लिखते हैं कि इमाम सज्जाद अ0 के काल में अब्दुलमलिक बिन मरवान और इसके बेटे वलीद बिन अब्दुालमलिक ने हिजाज़–व–इराक़ में जुबैरियों का सर कुचलने के बाद इस्लामी सरहदों को बढ़ाने पर ख़ासी

तवज्जो दी इस्लामी हदों को अफ्रीका की सरहदों सेमिला दिया और माले ग़नीमत के तौर पर बेशुमार ज़र–व–जवाहरात हासिल किए।

दूसरी तरफ इंदिलस में तारिक़ बिन ज़ियाद और मूसा बिन नसीर ने तख़त वतश्ते सुलेमान पर क़ब्ज़ा किया। और इस तरह जंगों में लगातार जीत से मुस्लमानों की कारोबारी हालत बेहतर होती गई। रोज़गार में ज़्यादती व बढ़ोतरी, समाज के मालदार तबक़े में ज़्यादा सामने आयीं थी क्योंकि बैत–उल–माल से साल भर की तनख़्वाहों के अलावा हाकिम की तरफ़ से मिलने वाले अनगिनत हदिये और तोहफे उनके माल में ज़्यादती का कारण होते गए।

इन मुल्कों की जीत के बाद 60 हज़ार लोग क़ैद हुए और मुसलमानों के बीच ग़ुलामों और कनीज़ों के तौर पर रहने लगे। इबने असीर लिखते हैं :''इन जंगों के बाद 65 हज़ार लोग क़ैद होकर लाए गए और इससे पहले इतनी बड़ी तादाद में क़ैद देखे ही नहीं गए थे। (मौसूआ इमाम ज़ैनुल आबेदी अ0 शेख़ मोहसिन अल हुसैनी, जि.2, पे. 166)

और कुछ इतिहासकारों का कहना है कि जब मुस्लमानों का लश्कर दमिशक़पहुंचा है तो उनके साथ हज़ार कनीजें थीं।

क़ैदियों में ज़्यादती के कारण, मुस्लमानों के बीच ग़ुलामों और कनीज़ों में ज़्यादती होती गई और नतीजे में मुस्लिम समाज में समाजी, संस्कृतिक, नैतिकीय और प्रशिक्षण तबदिलीयां महसूस होने लगीं जिसका ईलाज–ओ–मुदावा इस्लामी मुल्यों को बाक़ी रखने के लिए ज़रूरी हो गया था।

इमाम सज्जाद अ0 ने उन ग़ुलामों और कनीज़ों से ऐसा उच्च इन्सानी बर्ताव किया और इस तरह उनकी इलमी, दीनी और नैतिक प्रशिक्षण की कि उनमें से बहुत से इस्लामी समाज की नामचीन और लोकप्रय व्यक्तित्व बन गए।

मुस्लमानों का एक मसला ये भी था कि वो गुलामों और कनीज़ों से शादी को बुरा समझते थे और ये मसला मदीने में भी आम था।

''गुलामों और कनीज़ों की समाजी हैसियत न होने के कारण मदीने वाले उनसे शादी को या फिर उनसे होने वाली औलाद को अच्छा नहीं समझते थे। इस ग़लतफहमी की बुनियादी वजह ये थी कि उनके ख़्याल में किसी अरब की रगों में ग़ैर अरब का ख़ून नहीं आना चाहिए। उनके मुताबिक़, कनीज़ से पैदा होने वाली औलाद को समाज, इज्जत–ओ–शराफत की निगाह से नहीं देखता था और ये ग़लतफहमी सालों बाक़ी रही यहां तक कि इमाम जैनुल अबेदीन अ0 की शख्सियत निखर कर सामने आई जिसने उनकी सोच को बदल दिया। (मौसूआ इमाम ज़ैनुल आबेदी अ0 शेख़ मोहसिन अल हुसैनी, जि.2, पे. 166)

मदीने के लोग उम्मुल वलद कनीज़ से शादी को नापसंद करते थे यहां तक कि उनके दरमियान अली इब्नुल हुसैन अ0 की शख्सियत नुमायां हुई जो इलम–ओ–फ़काहत और ज़ोहद–व–परहेज़गारी में इस क़दर नुमायां हुए कि उम्मे–वलद कनीज़ के मुताल्लिक लोगों का नज़रिया बिलकुल बदल गयाऔर उनकी तरफ़ उनका तवज्जो बढ़ने लगी। (तारीख़े मदीनाए दमिश्क, इब्ने असाकर जि20, 57 ओयूनुल अख़बार इब्ने क़तीबा अल देज़ोरी, जि. 4, पे. 10)

इमाम सज्जाद अ0 ने समाज में इस ग़लत रिवाज को ख़त्म किया और ख़ुद फरजन्दे रसूल स0 और हसब–व–नसब में बेमिसाल–व–बेनज़ीर होने के बावजूद भी एक कनीज़ से शादी की और साहिबे औलाद हुए, जिसके बाद ये अमल धीरे धीरे लोगों में प्रचालित होने लगा।

गुलामों और

कनीज़ों से अच्छा बर्ताव

इमाम सज्जाद अ0 का गुलामों और कनीज़ों से व्यवहार कैसा था, दी गई दलीलों से साबित हो जाता है।

1. गुलामों की शिक्षण व प्रशिक्षणः

इमाम सज्जाद अ0, गुलामों और कनीजों की तालीम–व–तरबीयत में ख़ास तवज्जोह देते थे और आप उन्हें धार्मिक नैतिक–व–मुल्य एवं उच्च इस्लामी अहकाम और मसाइल की तालीम देकर उन्हें आजाद कर देते थे।

इमाम सज्जाद अ0 का ये तरीक़ा गुलामों और कनीज़ों पर इस क़दर असर–अंदाज़ हुआ कि वो आपके दिल–व–जान से दिल व जान से चाहते थे और आप की विलायत–व–इमामत और अहले–बैत अ0 के ऐतिक़ादी उसूलों का लगातार रक्षा करते रहे और कभी इमाम सज्जाद अ0 की सेवा में छोटी सी ग़लती भी नहीं करते थे।

2. कनीज़ों से शादी और उनसे औलाद

गुलामों और कनीज़ों से बरर्ताव क़ौमी–व–क़बाइली पक्षपात का शिकार था, उस समय में भी ज़माना–ए–जाहिलीयत के प्रभाव पाए जाते थे।

इमाम सज्जाद अ0 ने अपनी तमाम–तर अज़मतों, इलमी बुलंदियों और वांशिक ऊंचाई के बावजूद जाहिलियत अरब की इन तमाम विरासती रस्मों को ख़त्म किया और आप ने एक कनीज़ से शादी करली। इस अमल से आप का बुनियादी मक़सद, शरीयत की हिफ़ाज़त, इस्लामी मक़ासिद का तहफ्फुज़ और समाज को तबकाती और कबाइली पक्षपात से आज़ाद करना था।

बनी उमय्या ने इस बात की पूरी कोशिश की के कनीज़ से शादी के सबब इमाम की शख़्सियत–व–मंजिलत को निशाना बनाएँ, लेकिन इमाम सज्जाद अ0 ने इस्लामी मुल्यों को मद्दे–नज़र रखकर उन्हें मुंह तोड़ जवाब दिया।

मदीने का गवर्नर अब्दुलमलिक बिन मरवान ने मदीने के मशहूर और अहम शख़सियात ख़ास तौर से इमाम सज्जाद अ0 के लिए जासूस लगा कर रखे थे।उन्हीं जासूसों ने गवर्नर मदीना को बताया था कि इमाम सज्जाद अ0 ने अपनी कनीज़ से शादी की है।

मदीनाए मुनव्वरा में अब्दुलमलिक बिन मरवान का जासूस, उसे तमाम हालात से बाख़बर करता था। इमाम सज्जाद अ0 ने जब अपनी कनीज़ को आजाद करके इससे शादी की तो जासूस ने अब्दुलमलिक को ख़बर दी और फिर प्रतिक्रया में अब्दुलमलिक ने इमाम सज्जाद अ0 को कुछ इस तरह ख़त लिखाः

''व बादाहु, मुझे ख़बर मिली है कि आप ने अपनी कनीज़ से शादी की है जबकि आप जानते हैं कि आप की शादी के लिए कुरैश में ऐसे ख़ानदान हैं जिनसे रिश्ता आप की इज़्ज़त और बेटों में श्रेषठता का कारण होता। आप ने न अपना लिहाज़ किया और न ही भविष्य में अपनी औलाद की इज़्ज़त–ओ–आबरू का लिहाज़ किया । वस–सलाम''

इमाम सज्जाद अ0 ने मदीने गवर्नर को दलिलों के साथ और मुंह तोड़ जवाब दिया। आप जवाब में लिखते हैंः

''व–बादाहु कनीज़ से शादी के सिलसिले में तुम्हारा निंदनीय ख़त मुझे मिला और तुम्हारे ख़याल में, कुरैश में ऐसे घराने हैं, जिनसे रिश्ता मेरे लिए गौरव और मेरी नसल में श्रेष्ठता का कारण होता। तुम्हें ये मालूम होना चाहिए कि नस्ली शराफत और हसब–ओ–नसब में श्रेष्ठता के ऐतबार से रसूल–ए–खुदा स0 से ज़्यादा कोई भी उच्य व श्रेष्ठ नहीं है और रही बात कनीज़ की तो उसे बहुक्म ख़ुदा मैंने आज़ाद किया और

बारगाहे ख़दा में इनाम व सवाब का हक़दार हुआ, फिर सुन्नते रसूल स0 के मुताबिक़ मैंने इससे शादी किया। और याद रखना, दीनी ऐतबार से पाक–ओ–पाकीज़ा इन्सान की किसी भी चीज़ से मंज़िलत नहीं घटती। अल्लाह ने इस्लाम को पस्तियों, नुक़स–ओ–ऐब और मलामातों से आज़ादी का माध्यम बनाया है। मलामत–ओ–निदामत सिर्फ जाहिलियत के आदाब–ओ–अख़लाक में है। वस–सलाम''

अब्दुलमलिक ने ख़त को पढ़ा और अपने बेटे सुलेमान की तरफ फेंक दिया। उसके बेटे ने कहा अली बिन हुसैन ने आपको बड़ा अभिमानी ख़त लिखा है।

अब्दुलमलिक ने कहा ऐसा न बोल बेटा, ये बनी हाशिम की ज़बान है जब ये बोलते हैं तो इनकी ज़बान से ज्ञान का ऐसा समुंद्र मौजें मारता है जो चट्टानों के जिगर को भी चीर कर रख देता है। अली बिन हुसैन अ0 की अज़मत के आगे तमाम इन्सानों का क़द बौना है। (काफी, शेख़ किलिनी जि.3,पे.348, अलवाफी फ़ैज काशनी जि.22, पे.46, वसाएलुश्शिया हुर्रे आमली जि.40, पे.72–73)

जनाब ज़ैद बिन अली और हिशाम बिन अब्दुलमलिक की मुलाक़ात के दौरान कुछ कड़वी बातें हुई, इस सिलसिले में मोअर्रेख़ीन (इतिहासकार) लिखते हैं कि जब ज़ैद बिन अली ने हिशाम से मुलाक़ात के लिए इजाज़त मांगी तो हिशाम के क़रीबियों ने चारों तरफ से उन्हें घेर लिया और उन्हें दरबार में जाने से रोकने लगे।

जनाब ज़ैद ने कहा अल्लाह के बंदों में तक़्वे से ज़्यादा न कोई बरतर है और न ही कोई परहेज़गार नीचे होता है मैं आपको नसीहत करता हूँ कि अल्लाह की न–फरमानियों से डरें और परहेज़गारी अख़तियार करें।

हिशाम ने कहा तुम अपने आपको ख़िलाफत का हक़दार समझते हो और ख़िलाफत की तमन्ना करते हो? ए कनीज़ ज़ादे, तुम कब से ख़िलाफत के ख़्वाब देखने लगे।

जनाब ज़ैद ने जवाब दिया अल्लाह के नज़दीक अज़मत–ओ–बरतरी में, उसके चुने हुए नबियों से ज़्यादा कोई नहीं है, जब कि उनमें भी कुछ कनीज़ के बेटे थे। अगर शाने नबुव्वत में ये कमी का कारण होता तो अल्लाह कभी जनाब इस्माईल को नबी न बनाता। हिशाम ये बता कि अल्लाह के नज़दीक बरतर, नबुव्वत है या ख़िलाफत? और फिर उसके शरफ और आला नसबी का क्या मुकाबला जो रसूल–ए–खुदा स0 और अली मुर्तजा अ0 की नस्ल से हो। (बिहारुल अनवार, अल्लामा मजलिसी जि.46, पे.186)

बनी उमय्या और इमाम सज्जाद अ0 की सोच में बुनियादी फ़र्क़ये था कि बनी उमय्या ज़माना–ए–जाहिलीयत की पक्षपाठी सोज के तरफदार थे और इमाम सज्जाद अ0 एवं उनके बेटे जनाबे ज़ैद, इस्लामी तहज़ीब–ओ–संस्कृति के तरफ़दार थे जिसमें ज़माना–ए–जाहिलियत के किसी भी तास्सुब–ओ–बरतरी की कोई गुंजाइश नहीं है।

3. गुलामों को माफ़ करनाः

इमाम सज्जाद अ0 गुलामों और कनीज़ों के साथ माफ़ी का बर्ताव, नेकी और तवज्जोह से पेश आते थे।

इतिहास में अनगिनत मिसालें हैं जिनसे ये बात साफ़ होती है

1.इमाम सज्जाद अ0 ने एक गुलाम को किसी मकान बनाने का काम सौंपा। गुलाम ने तामीर में काहली की और ग़ैरमामूली नुक़्सानात हुए। इमाम सज्जाद अ0 को देखकर बहुत गुस्सा आया और आप ने कोड़े से इसको थोड़ी सी सज़ा दी जिस पर आप को अफ़सोस भी हुआ।

इमाम अपने घर तशरीफ लाए और गुलाम को बुलवाया। गुलाम जब आप आपकी ख़िदमत में पहुंचा तो उसने देखा कि आप कमीज़ उतारकर बैठे हैं। गुलाम ख़ौफज़दा हुआ कि इमाम और ज़्यादा सज़ा न दें। इमाम सज्जाद अ0 ने कोड़े उठाकर गुलाम के हाथ में दिया और कहा ऐ

गुलाम जिस तरह मैं आज पेश आया, ऐसा मैंने कभी भी नहीं किया और ये एक ग़ैर मामूली अयाग था, लिहाज़ा तुम ये कोड़ा उठाओ और अपना बदला ले लो।

गुलाम ने कहा आक़ा ख़ुदा की क़सम मैं तो यही सोच रहा था कि आप ने मुझे और ज़्यादा सज़ा के लिए बुलाया है। और मैं तो सज़ा का हक़दार भी हूँ। मैं किस तरह आप से बदला ले सकता हूँ।

इमाम फरमाते हैं वाए हो, तू क्यों नहीं समझता, मेरी ख़्वाहिश है कि तो मुझसे बदला ले

फिर इमाम ने फरमाया मआज़–अल्लाह, जा तू आज़ाद–ओ–बाअख़तियार है और ये जुमला आप ने कई बार दोहराया। अलबत्ता गुलाम, आप के ऐहतिराम में तैयार नहीं हुआ।लिहाज़ा इमाम ने जब देखा कि गुलाम किसी भी तरह तैयार नहीं है तो आप आने फरमाया ठीक है, अगर तू किसास (नुक़सान के बदले नुक़सान) और बदले पर तैयार नहीं है तो येमकान तुझ पर सदक़ा और इस तरह इमाम ने वो मकान उसे दे दिया। (मुसतदरकुल वसाएल नूरी तबरसी जि81, पे288)

2.इमाम की एक कनीज़ वुज़ू के लिए, लोटे से आप को पानी दे रही थी, अचानक लोटा कनीज़ के हाथ से छूटा और इमाम के मुँह पर गिरा और आपका मुँह ज़ख़मी हो गया। इमाम ने सिर उठा कर कनीज़ की तरफ रुख किया तो उसने इस आयत की तिलावत की {والكاظمين الغيظ}और अपने गुस्सा पर क़ाबू रखने वाले

इमाम ने फ़रमाया मेरा गुस्सा थम गया

कनीज़ बोली {والعافين عن الناس}और लोगों को माफ करने वाले

इमाम ने फरमाया अल्लाह ने तुझे माफ किया

कनीज़ बोली और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है

इमाम ने फरमाया जा तू आज़ाद है

3.रिवायत है कि इमाम अ0 ने दो मर्तबा गुलाम को पुकारा, गुलाम ने कोई जवाब नही दिया, तीसरी बार पुकारने पर जब गुलाम ने जवाब दिया तो इमाम बोले बेटा क्या तुमने मेरी आवाज़ नहीं सुनी

गुलाम बोला जी सुनी थी

इमाम ने पूछा फिर जवाब क्यों नहीं दिया

गुलाम बोला आप के स्वभाव से खुश था।

इमाम ने फरमाया हम्द उस खुदा की मेरा गुलाम मेरे अच्छे स्वभाव से खुश है।

(तारीख़ मदीना व दमिश्क़, इब्ने असाकर जि.41, पे.387)

इस तरह के वाक़ियात गुलामों और कनीज़ों के साथ इमाम सज्जाद अ0 के अच्छा बर्ताव, आप के माफ़ करने और नरम गोई को साबित करते हैं। और ऐसे अख़लाक के नमूने आप के जद रसूल अकरम स0 और अइम्मा ताहिरीन अ0 की सीरत के अलावा कहीं और नहीं मिल सकते।

4.गुलामों और कनीज़ों को आज़ाद करना

इमाम सज्जाद अ0, गुलामों और कनीज़ों को आजाद किया करते थे। साल में एक मर्तबा, अज्र–व–सवाब और लोगों के अंदर इस फिक्र को राइज करने के लिए, अपने गुलामों और कनीज़ों को आजाद किया करते थे। कि इस तरह तमाम इन्सान आज़ादी में बराबर और दूसरों की गुलामी से रेहा हों।

इमाम सज्जाद अ0 ने बहुत से गुलामों और कनीज़ों को ख़रीद रखा था। आप एक समय तक उन्हें अपने साथ रखकर उनकी प्रशिक्षण करते थे और फिर उन्हें आज़ाद कर देते थे।

कुछ इतिहासकारों का कहना है

''इमाम सज्जाद हर साल रमज़ान के पवित्र महीने की आख़िरी रात को लगभग बीस गुलामों और कनीज़ों को आजाद करते थे।(मौसूअत इमाम ज़ैनुल आबेदीन जि.2, पे. 181)

इमाम सज्जाद अ0 ने अपने आला इन्सानी बर्ताव से बेशुमार गुलामों और कनीज़ों की जिंदगी बदल दी और समाज में उन्हें एक स्थान दिया, अपने स्वभाव से उनके दिल–ओ–दिमाग़ पर अपनी मोहब्बत का नक़्शा बनाया। इमाम सज्जाद अ0 के इस बर्ताव के सबब न सिर्फ मुस्लमानों की तादाद बढ़ी बल्कि अहले बैत के चाहने वालों में भी इज़ाफा हुआ।

इमाम सज्जाद अ0

आर फ़करा की दखभाल

क़रीबों–व–मसाकीन के साथ बर्ताव में इमाम सज्जाद अ0 इन्सानित के लिए एक मिसाल थे। आप अ0 अलग अलग सिम्त और तरीक़ों से ग़रीबों और नादारों की मदद करते थे। निम्नलिखित कुछ मिसालों से इस का अंदाजा लगाया जा सकता है।

1.ग़रीबों के साथ नेक बर्तावः

अ : फ़ुक़रा का आदर करनाः इमाम सज्जाद अ0 अपने गुलामों के साथ तवज्जाहे से पेश आते थे। उनके एहसासात–व–जज़बात का ख़ास ख़्याल रखते थे। आप मागने वाले की मदद करते वक़्त उसके हाथों का चूमते थे ताकि उसे छोटे होने का एहसास न हो। ख़ुद मांगने वालों का इस्तिक़बाल करते थे और उन्हें ख़ुश–आमदीद कहते हुए फरमाते थे ''ख़ुश–आमदीद ऐ मेरी आख़िरत के ज़ख़ीरों'' (बेहारुल अनवार जि.46, पे. 98, अलमुनतज़िम इब्ने जूज़ी जि.6,पे328, सफवतुल सफवी इब्ने जूज़ी पे325)

ब : ग़रीबों से नरमी : इमाम सज्जाद अ0 ग़रीबों से बेहद मोहब्बत से पेश आते थे। अगर आप के दस्तर–ख़्वान पर अनाथ, मिस्कीन, ज़माने के मारे और परेशान हाल लोग बैठकर आप के साथ ख़ाना खाते थे, तो आप को बेहद ख़ुशी होती थी। आप अपने हाथ से उन्हें खाना निकाल कर देते थे। यही नहीं बल्कि उनके घरों तक खाना और ईंधन पहुंचाते थे। ग़रीबों से आप की मोहब्बत इतनी ज़्यादा थी कि आप रात के वक़्त दरख़्तों से खजूरें नहीं तोड़वाते थे कि कहीं ग़रीब लोग रात के अंधेरों में इससे वंचित न रह जाएं। एक मर्तबा जब रात के अंधेरे में आप के एक ख़ादिम ने खजूर के बाग से खजूरें तोड़ें, तो इमाम ने फरमाया रात के वक़्त न तोड़ो! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि रसूल अल्लाह स0 ने रात के वक़्त फसल काटने और ख़जूरें तोड़ने से मना किया है? और आप

फरमाते थे फ़सल काटते समय मांगले वाले को ज़रूर दिया करो। ये मांगने वाले का हक़ है। (नफहा मिन सीरते अइम्मा अहले बैत, बाक़िर शरीफ क़रशी, दारुल हुदा, इरान पे. 1)

इमाम सज्जादके दस्तर–ख़्वान पर खाने के वक़्त जब ग़रीबों और परेशान–ओ–नादार लोग बैठते थे तो इमाम बहुत ख़ुश होते थे। आप अपने हाथों से उन्हें खाना देते थे और परिवार वालों को घर के लिए भी देते थे। आप हमेशा खाने से पहले सदक़ा देते थे। अलताई कहते हैं: ''अली इब्नुल–हुसैन अ0 सदक़ा देने से पहले उसे चूमते थे। (मनाक़िबे आले अबी तालिब, इब्ने शहर आशोब जि4, पे 166)

सः मांगने वाले को मना न करना :

इमाम सज्जाद अ0 मांगने वालों को ठुकराने को मना करते थे क्योंकि उसका अंजाम अच्छा नहीं होता है, मांगने वालों को रद्द करने से इन्सान, नेअमतों की कमी, आकसमिक परेशानी वग़ैराह जैसी चीजों का शिकार होता है। सईद बिन मुसैय्यब कहते हैं मैं एक दिन इमाम अली इब्नुल–हुसैन अ0 की ख़िदमत में था। आप ने नमाज़ ज़ोहर अदा ही की थी कि दरवाज़े पर साएल ने खटखटताया। इमाम ने फरमाया मांगने वाले की ज़रूरत को पूरा करो, उसे हरगिज़ न ठुकराओ। (फुरुए काफी, जि.2,पे.18, अल–वाफी जि. 10, पे. 411)

इमाम सज्जाद अ0 ने बहुतरिवायात में इस अमल की ज़रूरत–व–अहमीयत की तरफ़ इशारा किया है।

एक ज़रूरतमंद फकीर को ठुकराना और उसकी ज़रूरत को पूरा करने से बचाव नेअमत की कमी और अल्लाह के ग़ज़ब का सबब होता है। अइम्मा अ0 की बहुत सीरिवायात से इस बात को समझा जा सकता है। लिहाज़ा, अगर कोई ये चाहताहै कि लगातार अल्लाह की नेअमतें उसे मिलती रहें, तो न तो कभी किसी मांगने वाले को लौटाए और न ही किसी ग़रीब को अल्लाह की दी हुई नेअमतों से महरूम रखे।

2.क़र्ज़दारों के क़र्ज़ की अदायगी

इमाम सज्जाद अ0 की उदारता मशहूर–व–मारूफ थी। क़र्ज़दार लोगों का कर्ज़ जितना भी हो, आप उनकी मदद करते थे। ऐसे बेशुमार इतिहासिक वाक़ेया हैं जिनसे ये बात साबित होती है।

यहां कुछ मिसालें देखने के क़ाबिल हैं :

इमाम सज्जाद अ0 मोहम्मद बिन उसामा बिन ज़ैद की अयादत (मरीज़ को देखने जाना) के लिए गए। इमाम सज्जाद अ0 को देखकर, वो रोने लगे। इमाम ने रोने का सबब पूछा, तो उन्होंने कहा कि मैं क़र्ज़दार हूँ। इमाम ने पूछा कर्ज कितना है? वो बोले पंद्रह हज़ार दीनार। इमाम ने फरमाया तुम्हारा क़र्ज़ मैं अदा करूँगा।(मनाक़िब अले अबी तालिब इब्ने शहर आशोब जि.4, पे.177, सिरए आलामअल नबला जि.3,पे.481)

इस तरह इमाम सज्जाद अ0 ने मोहम्मद बिन उसामा के कर्ज़ के बोझ को हल्का किया और उनके घर से निकलने से पहले ही, उनके क़र्ज़ को अदा कर दिया

3.आम दस्तरख़्वान

इमाम सज्जाद अ0 के उदारता की एक और नुमायां मिसाल ये है कि मदीनाए मुनव्वरा में हररोज़ नमाज़े ज़ोहर के बाद अपने घर में आम खाना करते थे। (नफहात मिन सीरते अइम्माए अहलेबैत पे. 182)

4.ग़रीबों की किफालत (ज़िम्मेदारी लेना)

इमाम सज्जाद अ0 की एक और नुमायां ख़ूबी ये थी कि मदीना में एक सौ ग़रीब ख़ानदानों की प्रायोजन करते थे जबकि हरघर ख़ानदान में अच्छे ख़ासे लोग हुआ करते थे। (मनाक़िबे आले अबी तालिब, इब्ने शहर आशोब जि4, पे 166)

5.ख़ुफ़िया मदद

मदीनाए मुनव्वरा में इमाम सज्जाद अ0 जिन ग़रीबों की मदद करते थे, उन्हें ये नहीं मालूम था कि आप उनकी मदद करते हैं। इमाम सज्जाद अ0 की शहादत के बाद उन्हें एहसास हुआ कि रात के अंधेरे में उनकी मदद करने वाले इमाम सज्जाद अ0 ही थे। (सफतुल सफवी इब्ने चूज़ी जि.1, पे.326)

अहमद बिन हनबल, मुअम्मर बिन शैबा बिन नुआमा से रिवायत करते हैं कि इमाम सज्जाद अ0 एक सौ घरों की प्रायोजन करते थे, और कहा जाता है कि हर घर में अच्छी तादाद में लोग होते थे। 'हौलिया उल–औलिया' के लेखक जनाब आएशा से रिवायत नक़ल करते हैं कि छुपा कर सदक़ा किसे कहते हैं, मदीना वाले नहीं जानते थे, इस हक़ीक़त का अंदाज़ा उन्हें अली इब्नुल–हुसैन अ0 के इस दुनिया से जाने के बाद हुआ। (मनाक़िबे आले अबी तालिब, इब्ने शहर आशोब जि4, पे 166)

ज़हबी नक़ल करते हैं कि मदीने के कुछ तंग–दस्त लोगों का कहना था कि पोशीदा सदक़ा किसे कहा जाता है ये हमें जनाब अली इब्नुल–हुसैन अ0 के इस दुनिया से जाने के बाद मालूम हुआ। (सीरए आलाम अल–नबला जि.3, पे.481, हलियातुल औलिया जि. 2, पे. 41)

मोहम्मद बिन इसहाक़से रिवायत है कि मदीनाए मुनव्वरा में कुछ घर ऐसे थे, जिन्हें रोज़मर्रा की ज़रूरियात का सामान हर–रोज़ रात के वक़्त मिल जाता था लेकिन उन्हें ये नहीं मालूम था कि उन्हें कौन देता है। इमाम ज़ैनुल आबेदीन अ0 के इस दुनिया से जाने के बाद उन्हें मालूम हुआ तो पछाड़ें मार कर रोने लगे।

पांचवें इमाम अ0 से रिवायत है कि इमाम सज्जाद अ0 रात के अंधेरे में खाने से भरी बोरी, अपने काँधों पर रखकर ग़रीबों के घर पर पहुंचाते थे।

आप उन लोगों की भी मदद करते थे जो आप के पास आकर मांगते थे। उनकी मदद करते वक़्त अपने चेहरा पररूमाल डाल लेते थे कि कहीं मांगने वाला उन्हें पहचान न ले।

एक दूसरी रिवायत में है कि जब रात की अंधेरे में लोग अपने घरों में सो जाते थे तो इमाम सज्जाद अ0 अपने घर की ज़रूरत भर का अनाज निकाल कर, बक़िया बोरी में भरकर कंधों पर रखते थे और हाजतमंदों के घरों तक पहुंचाते थे और आप के चेहरा पर रूमाल बंधा होता था। इमाम अ0 सब के घरों तक समान पहुंचाते थे और बहुत से लोग तो इमाम की राहें तकते थे, आप को देखते ही कहने लगते थे 'बोरिया वाले आगए'। (मनाक़िबे आले अबी तालिब, इब्ने शहर आशोब जि4, पे 166)

इबन ऐयीना अबी हमज़ा सुमाली से रिवायत करते हैं कि इमाम अली इब्नुल–हुसैन अ0 रात के अंधेरे में अपनी पीठ पर रोटियाँ लाद कर ग़रीबों को तलाश करते थे और फरमाते थे रात के अंधेरे में सदक़ा परवरदिगार के ग़ज़ब को दूर करता है।(सीरए आलाम अल–नबला जि.3, पे.481, हलियातुल औलिया जि.2, पे.41)

अबू नईम असफहानी इस रिवायत को एक दूसरी तरह नक़ल करते हैं पोशीदा सदक़ा ख़ुदा के ग़ुस्से को दूर करता है। (हलियातुल औलिया जि.2, पे. 416)

मोहम्मद बिन इसहाकसे रिवायत है कि मदीनए मुनव्वरा में बहुत से घरों में नान–ओ–आजूक़ा(राशन–पानी) हर–रोज़ पहुंचता था, लेकिन उन्हें ये नहीं मालूम था कि देने वाला कौन है। इमाम अली इब्नुल–हुसैन अ0 के इस दुनिया से जाने के बाद उन्हें एहसास हुआ कि रात की तारीकी में उन्हें खाना पानी पहुंचाने वाले आप ही थे।

ज़ोहरी कहते हैं कि इमाम जैनुल अबेदीन अ0 की शहादत के बाद ग़ुसल के दौरान, आप की पीठ पर निशान सा मिला ,उस वक़त ये मालूम हुआ कि वो इन बोरीयों का निशान था जिनमें इमाम सजाद रात के अंधेरे में

ग़रीबों के लिए ख़ाने की चीजें ढ़ो कर ले जाते थे। अम्र बिन साबित कहते हैं जब जनाब अली बिन–हुसैन अ0 को गुसल दिया गया तो लोगों ने उनकी पीठ पर काला निशान देखा और पूछने लगे कि ये निशान किस चीज़ का है? तो जानने वालों ने बताया कि ये उन बोरीयों का निशान है जिनमें इमाम आटा भरकर अपनी पीठ पर लादते थे और मदीने के गरीबों के बीच बांटा करते थे। कुछशिया रावियों के मुताबिक़ इमाम सज्जाद अ0 को गुसल के लिए लेटाया गया कि तो आप की पुश्त पर ऊंट के टख़नों जैसा गट्टे का निशान था जो पुश्त पर फ़क़िरों के लिए अनाज की बोरीयां लादने के कारण हुआ था।

ग़रीबों के साथ इमाम सज्जाद अ0 की नरमी और अच्छा बर्ताव इस हद तक बुलंद–व–आला था कि आप ने कभी भी उनके साथ बदसुलूकी नहीं की। आप का ये अमल, हम सब के लिए एक अज़ीम सबक़है कि हमें किस तरह फक़ीरों और नादारों की मदद करनी चाहिए ताकि हमारा मुआशरा तरक़्क़ी और बुलंदियों की तरफ जा सके।

इमाम सज्जाद अ0

और रिसालए हुकूक़

किताब हकूक़–ए–इंसानी समाज के लिए इमाम सज्जाद का एक अज़ीम इल्मी सरमाया है। इस किताब में इमाम ने इन्सानों के अहम हुकूक को बयान फरमाया है। इमाम सज्जाद अ0 ने अन्तर्राष्ट्रीय हियूमन राईट्स की किताब से सदियों पहले इन्सानी हुकूक की व्याखयां व तौज़ीह की जिससे ये अंदाज़ा किया जा सकता है कि इन्सानी हुकूक़ की इकाई में किस कदर आप की निगाह थी।

इमाम सज्जाद से मरवी हुकूक़ के इस संग्रह को सहिफाए सज्जादिया के बाद एक अहम इल्मी मर्तबा हासिल है। इमाम सज्जाद अ0 ने उस किताब में इन्सान का उसके ख़ुदा, उसकी आत्मा और दूसरे इन्सान एंव जीयों के लिए ज़िम्मेदारियों को बयान किया है। इब्ने शेबा हिरानी ने ''तोहफुल उकूल'' में इस रिसाला में 50 हुकूक़ नक़ल किए हैं जबकि शेख़सदूक़ ने''ख़िसाल'' में 51 हुकूक़ बयान फरमाए हैं।

इमाम सज्जाद अ0 और इन्सानी हुकूक़ का बुनयादी ख़ाकाः

इमाम सज्जाद अ0ईन्सानी हुकूक़ के बुनियाद रखने वाले और बानी हैं।चौदह सदियों में आप वह पहला इन्सान हैं जिसने इन्सानी हुकूक़ की बुनियाद रखी और इसकी वजह ये है कि आप उनकी एहमियत–व–ज़रूरत का अंदाजा रखते थे। आप ये जानते थे कि इन्सानी हुकूक़ केबग़ैर समाज में समाजी हुकूक़ की अदायगी, अदल–व–इन्साफ, इन्फिरादी और समाजिक मले मिलाप और रिश्तों में आपसी ऐहतिराम, दूसरों के साथ माफ़ी तलाफ़ी और उनकी सोच का लिहाज़–व–ऐहतिराम किए बग़ैर नामुम्किन है।

रिसालाए हुक़ूक़ को तालीमी सिलेबस में शामिल करना चाहिए ताकि समाज में स्टूडेंट हक़ पहचानने वाले बनें और समाज में इन्फिरादी–व–इजतिमाई सतह पर हक़ पहचानने की सलाहियत आए और लोगों में दरगुज़र, नरम दिली और एक दूसरे के ऐहतिराम का जज़बा पैदा हो।

अगर मुआशरे में इन हुक़ूक़ का तहफ़्फ़ुज़ न हो तो समाजिक तनाव, आपसी इख़्तिलाफात और इंतिशार का शिकार होता है और इन्सान अगर कम से कम अपनी आत्मा पर वाजिब हुक़ूक़ को पहचान ले तो समाज में क़ानून का बोल–बाला और लोगों के बीच एक दूसरे की बनिस्बत इज़्ज़त–व–ऐहतिराम बढ़ता है और आयते मुबारका की अमली तफसीर–व–ताबीर होती है : {وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا} ''और बे–शक हमने बनी–आदम को करामत बख़शी और उन्हें बहर–ओ–बर का सफर कराया, उन्हें पाक ग़िजाओं का रिज़्कदिया, और अपनी मख़लूक़ात में बेशुमार चीज़ों पर उन्हें बरतरी दी(सूरह इसरा आयत 70)

इस आयत में अल्लाह ने दीन–व–मज़हब, क़ौम–व–मिल्लत, और रंग–व–मिज़ाज की क़ैद के बग़ैर तमाम इन्सानों के बाकरामत–व–अज़ीज़ होने को बयान किया है।

इमाम अली बिन–हुसैन इब्ने अली बिन अबी तालिब इमाम सज्जाद अ0 ने कर्बला के अज़ीम वाक़िए के बाद इस रिसाला की तालीम दी थी। वो वाक़िया कि जिसमें इस्लामी तालीमात–व–हिदायात ही नहीं बल्कि बुनियादी इन्सानी हुक़ूक़ को पैरों तले रौंदा गया।

रिसालए हुक़ूक़ के इमतियाजात–व–ख़ासुसीयात

रिसाला हुकूक़ इसलिए अहम–व–बरतर हैं क्योंकि हुकूक़ के बाब में इससे पहले इस तरह का कोई नुस्ख़ा–व–मंशूर नहीं था जबकि मौजूदा आलमी इन्सानी हुकूक़ का सबसे क़दीमी मंशूर सिर्फ दो सदी पहले वजूद में आया है। यही नहीं बल्कि संयुक्त राष्ट्र इन्सानी हुकूक़ का घोषणापत्र भी 10–दिसंबर 1948 ई0 में लिखा गया है और इस में दर असल फ्रांस की तहरीके आज़ादी के इस घोषणापत्र से लिया गया है जो 1789 ई0 में हुआ था और इसमें बुनियादी इन्सानी हुकूक़ से मुताल्लिक़ कुछ बंद शामिल थे।

हुकूक़ की तमाम किताबों, मंशूर और दस्तावेज़ों पर इमाम सज्जाद अ0 के रिसालाए हुकूक़ का इमतियाज ये है कि इसमें मौजूद हुकूक़, आलमी इन्सानी हुकूक़ के मंशूर से कहीं ज़्यादा हैं और इस में 50 या 51 हुकूक़ का बयान है।इमाम सज्जाद अ0 का ये रिसाला, तोहफुल ऊकूल के मुताबिक पचास और शेख़सदूक़ की ख़िसाल के मुताबिक़ इक्यावन हुकूक़ पर मुश्तमिल है। जबकि आलमी इन्सानी हुकूक़ के मंशूर में सिर्फ 29 बंद हैं। इसका बुनियादी सबब ये है कि इमाम सज्जाद अ0 ने रिसालए हुकूक़ में उन चीज़ों के हुकूक़ को भी शामिल किया है जिनसे आलमी हुकूक़ की तंजीम ने नज़र अन्दाज़ है, जैसे इन्सानों पर अल्लाह का हक़, जो तमाम हुकूक़ से अफ़ज़ल–व–बरतर है।

इमाम सजाद अल्लाह की जानिब से इन्सानों पर वाजिब किए गए हुकूक़ को भी बयान किया है, यही नहीं बल्कि आपने ये भी वाज़ेह किया कि इन्सान का ख़ुद अपने ऊपर हक़क्या है।

अहम हुक़ूक

इमाम सज्जाद अ0 ने रिसालए हुकूक़ में लोगों पर हक़्क़े अल्लाह, आत्मा के हक़ और दूसरे इन्सानों और चीज़ों के बनिस्बत ज़िम्मेदारी के हुकूक़

को बयान किया है। यहां फ़ेहरिस्त में रिसालए हुक़ूक़ की तरतीब देखी जा सकती है:

1.ख़ालिक–व–मख़लूक़ का हक़ (हक़्कुल्लाह और हक़्कुन–नफस)

2.आज़ा–व–जवारेह का हक़ जैसे ज़बान, कान, आँख, हाथ, पैर, पेट और शर्मगाह जैसी चीजों का हक़।

3.अफआल–व–इबादात का हक़ जैसे नमाज़, हज, रोज़ा, सदक़ा और हक़्क़े हिदायत वग़ैरह।

4.अइम्मा और सरबराहों का हक़ जैसे हुकमरानों और दानिश्वरों का हक़।

5.रिआया और ज़ेर–दस्तों का हक़ इसमें चंद हुक़ूक़ शामिल हैं, जैसे रिआया, शागिर्द, ज़ौजा और गुलाम–व–कनीज़ों के हुक़ूक़।

*रिश्तेदारों के हुक़ूक़

रिश्तेदारों के हुक़ूक़ की कई क़िस्में हैं:

माँ बाप के हुक़ूक़, औलाद के हुक़ूक़, भाई बहनों के हुक़ूक़, आक़ा और गुलाम के हुक़ूक़

6.आम लोग और दूसरी चीज़ों के हुक़ूक़

इसमें चौबीस हुक़ूक़ शामिल हैं

जैसे मोअज़्ज़िन का हक़, इमाम जमात का हक़, साथ रहने वाले का हक़, दोस्तों का हक़, पड़ोसी का हक़, शरीक और पार्टनर का हक़, बुज़ुर्गों का हक़, छोटों का हक़, मुस्लमानों का हक़, काफिरेज़िम्मी का हक़ वगैरह।

काबिले ग़ौर बात ये है कि इमाम सज्जाद अ0 ने रिसालए हुक़ूक़ के आख़िरी हिस्से में मुस्लमानों के हुकुक़ को बयान फरमाया है। मुस्लमान जिस फिर्क़े और मकतबे फ़िक्र से हो, उसे ये हक़ है कि वो अपने ऐतिक़ादात और दीनी अहकामात–व–इबादात की पैरवी करे। मुस्लमानों के हुकुक़ के बाद इमाम सज्जाद अ0 ने एक हुकूमत–व–ममलेकत में बसे लोगों के हुकुक़ बयान किए हैं। उनका दीन–व–मज़हब कुछ भी हो, इन्सान होने के ऐतबार से सब बराबर और एक मुल्क में रहने वाले हैं। लिहाज़ा मालिक का बाशिंदा होने के ऐतबार से उन्हें मुकम्मल आज़ादी होनी चाहिए कि अपने दीनी रूसूमात पर दूसरों के दरमियान नशर–व–तब्लीग़ के बगैर अमल करें। उन्हें पूरा हक़ है कि वो अपने दीन–व–शरीयत के मुताबिक निकाह–व–तलाक़वग़ैरा जैसे जिंदगी में होने वाले मसाइल, आज़ादी से अंजाम दें। चुनांचे इमाम सजाद ज़िम्मी के हवाले से फरमाते हैं अहले ज़िम्मी का हक़ ये है कि जो कुछ उन्हें अल्लाह ने दी है, तुम भी उन्हें दो और जब तक वो अल्लाह के साथ किए अहद पर पाबंद रहें हरगिज़ उन पर सख़्ती न करो। (अलवाफी जि. 6 पे. 134)

रिसालए हुकुक़ एक अहम तारीख़ी सरमाया है और इस बात की ज़रूरत है कि ज़्यादा से ज़्यादा उसकी तालीम–व–तहक़ीक़ हो। अतः इससे ये भी वाज़ेह होता है कि अहले बैत फ़िक्र की किस बुलंदी पर पहुंचे हुए थे और किस क़दर आप की ज़िन्दगी इलाही रंग में डूबी थी।

रिसालए हुक़ूक़

और समाजी अदल–ओ–इन्साफ

इस्लामी समाज की सबसे बुनियादी ज़िम्मेदारी ये है कि मुआशरे के लिए ऐसे क़ानून बनाएँ जिनसे लोगों के दरमियान आपसी ताल्लुक़ात बहाल रहें और तमाम ईलाही अदयान और शरीयतों का यही नसब उल–ऐन रहा है। रिसालए हुक़ुक़ में मौजूद ख़ालिक़–व–मख़लूक के दरमियान मौजूद हुक़ुक़ के मुताअले से ये अंदाज़ा होजाता है इस्लाम के तमाम अहकाम वाहिद नसब उल–ऐन और बुनियादी फलसफ ये है कि लोगों के दरमियान तमाम फर्दी और इजतिमाई जिंदगी में एक दूसरे के हुक़ुक़ की अदायगी का एहसासे ज़िम्मेदारी जागे।

मुआशरे में समाजी, इक़तेसादी या इदारों में अदल–व–इन्साफ राइज होने के लिए ज़रूरी है कि लोग एक दूसरे के हुक़ुक़ का पास–ओ–लिहाज़ करें और तमाम शरई अहकाम की असास–ओ–बुनियाद भी इन्हीं हुक़ुक़ पर टिकी हों। इसी ज़रूरत के पेशेनज़र, इमाम सज्जाद अ0 ने तमाम मुस्लिम–व–ग़ैर मुस्लिम दानिशवरों और माहिरीन कानून पर सबक़त ली और इन्सानी मुआशरे के लिए ऐसे हुक़ुक़पेश किए जिन पर समाज के तमाम अख़लाक़ी और तरबीयती उसूल कादारो मदार है।

रिसालए हुक़ुक़ के आग़ाज़ ही में इमाम सज्जाद अ0 ने ये वाज़ेह किया कि इन्सान की जिंदगी ऐसे हुक़ुक़ के घेरे में है जिनकी पहचान और मारेफत उसका मूल कर्तव है। इसके बाद हक़्कुलल्लाह को बयान किया जो सबसे अज़ीम और बरतर हक़ है और फिर उसके बाद हक़्कुलल्लाह पर मबनी वो हुक़ुक़ जो अल्लाह ने इन्सान की आत्मा पर वाजिब किए हैं। हक़ उल–नफस के बाब में इमाम ने ये बताया कि इन्सान का अपनी आत्मा से मुताल्लिक कैसा सुलूक़ हो, उसके बाद इमाम ने हक़क़ेनास के इकाई में इन्सानों का एक दूसरे से सुलूक़ कैसा हो। इस बाब में इमामने

राजा व प्रजा, ख़ानदान–व–रिश्तेदार, दोस्त–व–अहबाब और पड़ोसियों के हुकुक़ को वाज़ेह किया। इसी के साथ इमाम ने दूसरे साहबे हुकुक़ के हुकुक़ को वाज़ेह किया, जैसे मोअज़्ज़िन, इमामे जमाअत, हमनशीन, शरीके तिजारत, क़र्ज़दार, दुश्मन, मुशाविर–व–मश्वरा मांगने वाले, नसीहत करने या नसीहत लेने वाले, मांगने वाले और देने वाले, बड़े छोटे वग़ैरा के हुकुक़, यही नहीं बल्कि इमाम ने रिसालए हुकुक़ में काफिरेज़िम्मी और मुस्लमानों के दरमियान रहने वाले दीगर गैर मुस्लिम लोगों के हुकुक़ को भी बयान किया है।

हम पर वाजिब है कि हम इमाम सज्जाद अ0 के रिसाला–ए–हुकुक़ पर ख़ास तवज्जोह दें और लोगों के दरमियान ज़्यादा से ज़्यादा इसे राइज करें ताकि हर इन्सान ख़ुद पर फ़र्ज़ तमाम फर्दी, समाजी और मआशी हुकुक़ को पहचाने ताकि मुआशरे में अदल–व–इन्साफ राइज हो।

वाअख़िर दावाना इन्नल हम्द लिल्लाहे रब्बिल आलेमीन,वसल्लल्लाहो अला मोहम्मदुवं व आलेहित्तैय्या बीनताहेरीन

मसादिर–व–अस्नाद

1.कुरआन–ए–मजीद

2.इबन अललसीर, बू उल–हसन ऐत बिन बी अलर्मि मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अबद अलरीम बिन अबद उल–वाहिद अलशेबानी (त ६३०ह ई:), अलका मिल फी उल–तारीख, मुराजा और तसहीह मुहम्मद यूसुफ उल्काक, दार अलकतब अलालमी, बेरूत लुबनान, चौथी तबा १४२४ ई:ह २००३–ए–ई:

3.इबन अलजोजी, बू अलफरज अबदुर्रहमान बिन अली बिन मुहम्मद(त५६७ह) ई:, अलमंतजम फी तारीख़अलामम वालमलोक, दार अलकतब अलालमेह, बेरूत लुबनान, पहली तबा१४१२ह ए– ई

4.इबन अलजोजी, बू अलफरज अबदुर्रहमान बिन अली बिन मुहम्मद (त५६७ह) ई:, सफ अलसफो, तहकीक द।अबदुलहमीद हिंद ऊई, अलमकतब उल–असर ये, बेरूत लुबनान, तबाअत १४३०ह ए– ई

5.इबन कतीबा अलदीनोरी, बू मुहम्मद अबद अल्लाह बिन अबद अलमजीद बिन मुस्लिम (त २७६ह ई: ८८६–ए–ई: ‘उयून अलखबार, दार अलकतब अलालमेह, बेरूत, तीसरी तबा १४२४ह ए– ई

6.इबन शोबा अलहरानी, अब्बू मुहम्मद उल–हसन बिन अली बिन उल–हुसैन, तोहफुल उकूल अनिर रसूल, तसहीह–ओ–तालीक अली अकबर गफ्फारी, मोसिसा अलनशर अलासलामी, कुम, दूसरी तबा१४०४ह ई:

7.इबन तावोस, अब्बू अलका सिम अली बिन मूस बिन जाफर बिन मुहम्मद ६६४ह ई:, महज अलदावात विमंहज अलाबादात, मूसस अलाइलमी ललमतबवात, बेरूत, तीसरी तबा १४३२ह ए– ई

8.इबन असाकिर,अब्बू अलका सिम अली बिन उल–हसन बन हब अल्लाह बिन असाकिर अलद मुश्की (त११७६–ए–ई:), तारीखमदीना दमिशकदार अलफक्र, बेरूत, तबाअत सन१४१५ह ई:

9.अलासफहानी, अब्बू नईमा हमद बिन अबद अल्लाह बिन अहमद बिन इसहाकबिन मौसी(त ४३०ह ई: १०३८–ए–ई:), हली अलावलया–ए–वतबकात अलासफया–ए–, तहकीकरूसामी अब्बू जाहीन, दार अलहदीस, अलकाहर मिस्र,१४३०ह ए– ई

10.अलबेशवाई, महदी, सेर अलाइमा उल्लासनी अशर, दार अलका तब अलारबी, बेरूत लुबनान, पहली तबा १४२६ह ईः २००५–ए–ईः

11.अलहर इला मिली, अब्बू जाफर मुहम्मद बिन उल–हसन बिन अली(त११०४ह ईः), तफसील वसाइल अलशेअ अली तहसील मसाइल अलशरएहि, मोसिसा ऑल अलबीत लाहिया–ए–अलतरास, बेरूत, लुबनान, पहली तबा १४१३ह ए– ई

12.उल–हुसैनी, मुहसिन, मोस्वा अलामाम जैन इला बदीन आ,दार अलमहज अलबेजा, बेरूत लुबनान, पहली तबा १४३५ह ए– ई

13.अलजहबी, शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद बिन उसमान (त७४८ह ईः ‘सेरा अल्लाम अलनबला–ए–, अलमकतब उलार बया, बेरूत, पहली तबा१४३५ह ए– ई

14.अलरी शहरी, मुहम्मद, मीजान अलहकम, मूसस दार अलहदीस अलसकाफी, बेरूत, लुबनान, पहली तबा १४१९ह ईः

15.जैन इला बदीन, अलामाम अली बिन उल–हसन बिन अली बिन अबी तालिब आ, अलसहीफ अलसजादी अलकामल, मूसस अलाइलमी ललमतबवात, बेरूत लुबनान, पहली तबा१४२४ह ए– ई

16.इलश्रीफ अलरजी, बू उल–हसन मुहम्मद बिन बी अहमद उल–हुसैन बिन मौसी इबन मुहम्मद बिन मौसी बिन इबराहीम इबन अलामाम मौसी अलकाजम (त४०६ह ईः १०१५–ए–ईः), नहज अलबलाग लल्ला माम अली इबन अबी तालिब, शरह उल–शेख मुहम्मद अबदा, दार अलबलाग, बेरूत लुबनान, चौथी तबा १४०९ह ए– ई

17.अलसदूक, अब्बू जाफर मुहम्मद बिन अली बिन उल–हुसैन बिन बाबू ये अलकमी(त ३८१ह ईः), अल्लामा ली, मूसस अलबासी, कुम, पहली ह ई

18.अलसदूक, अब्बू जाफर मुहम्मद बिन अली बिन उल–हुसैन बिन बाबू ये अलकमी(त ३८१ह ईः), अलखसाल, मूसस अलाइलमी ललमतबवात, बेरूत लुबनान, पहली तबा १४१०ह ए– ई

19.अलतबरसी , अलमेरजा हुसैन बिन मुहम्मद तकी बिन अली मुहम्मद बिन तकी अलनोरी(त१३२०ह ईः), मस्तद ‘काफ अलोसाइल वमस्तंबत अलमसाइल, दार अलहदाए, बेरूत लुबनान, पांचवें तबा १४१२ह ए– ई

20.अलतबरसी, अब्बू अली अलफजल बिन उल–हसन (त५४८ह ईः), मजमा उलब्यान फी तफसीर उल–कुरआन, दार अलमारफ, बेरूत लुबनान, पहली तबा १४०६ह ए– ई

21.अलतिबरी, अब्बू जाफर मुहम्मद बिन जरीर बिन यजीद बिन कसीर बन गालिब(त३१०ह ई: ९२३–ए–ई:), तारीखअलतिबरीरूतारीखअलामम वालमलोक,दार अलकतब अलालमी,बेरूत,लुबनान,दूसरी तबा१४२४ह ए– ई

22.अलफैज अलका शानी, मुहम्मद बिन मुर्तजा(त१०९१ह ई:), किताब अलवाफी, तहकीक अलसीद अली अबदुलमुहसिन बहर उल–उलूम, दार एहया अलतरास् अलारबी, बेरूत लुबनान, पहली तबा १४३२ह ई: २०११–ए–ई:

23.अलकरशी, बाकिर शरीफ, नफहात मन सेर महा हल अलबीत आ,दार अलहदी, कुम, पहली तबा १४२४ह ई:

24.अल्कलीनी, मुहम्मद बिन याकूब (३२९ह ई:),उसूल अलकाफी, तर्तीब, तसहीह–ओ–तालीका उल–शेख मुहम्मद जाफर शम्सुद्दीन, दार अलतारफ ललमतबवात, बेरूत लुबनान, तबाअत सन १४१९ह ए– ई

25.अलकलीनी, मुहम्मद बिन याकूब (३२९ह ई:),उसूल अलकाफी, तर्तीब, तसहीह–ओ–तालीका उल–शेख मुहम्मद जाफर शम्सुद्दीन, दार अलतारफ ललमतबवात, बेरूत लुबनान, तबाअत सन १४१३ह ए– ई

26.अलमतकी अलहंदी, अला उद्दीन अली बिन हुसाम उद्दीन(त९७५ह ई: १५६७–ए–ई:, कंज अलामाल फी सुंन अलाकवाल वाला फआल, मूसस अलर्सायह , बररोत लुबनान , तबाअत१४०९ह ए– ई

27.अलमजलसी, मुहम्मद बाकिर बिन मुहम्मद तकी(त ११११ह ई:, बिहार अलानवार लदरर खबार अलायम अलातहारर, मूसस हल अलबीत, कुम, चौथी तबा १४०९ह ई: १९८९–ए–

तआरुफ लेखक

अल्लामा डाक्टर शेख़ अब्दुल्लाह अहमद काज़िम मोहम्मद यूसुफ अलयूसुफ सऊदी अरब के पूर्वी हिस्से में क़तीफ के शहर हिल्ला में सन 1383 हि0 बमुताबिक़ 1964 ई0 में पैदा हुए।

आप मुआसिर के एक इस्लामी विचारक और बुद्धिजीवी हैं। आप ने हौज़ाए इल्मिया कुम के बुजुर्ग मराजे तक़लीद के दुरूसे ख़ारिज में इल्म हासिल किया और उनसे इजाज़ते हदीस भी हासिल है।

1432 हि0 मुताबिक 2011 ई0 में जामए अल–मुसतफा अल आलमी से आपने इस्लामी फिक़्ह–ओ–मआरिफ में डाक्टरेट की डिग्री हासिल की और इस के बाद वतन क़तीफ के शहर हिल्ला में मस्जिद रसूल आज़म में बहैसीयत इमाम जमात मशगूले ख़िदमत हो गए। ये एक नई मस्जिद थी जिसकी तामीर सन 1432 हि0 में हुई थी।

फिक़्ह, क़ुरआन और इलम–ओ–सक़ाफ्त जैसे विषयों पर होने वाली अनगिनत बैन–उल–अक़वामी, ख़लीजी और इलाक़ाई कांफ्रेन्सों में शिरकत आपका एज़ाज़ रहा है। आपकी अहमियत–ओ–दानाई के पेश–ए–नज़र अनगिनत रिसालों, किताबों और वैबसाईटस पर आपका जिंदगी नामा मौजुद है।

आप एक कोहनामश्क ख़तीब और मुक़र्रिर भी हैं। आपकी तक़ारीर और टॉक शोज़ जो मुतअद्दिद टीवी और सैटेलाईट चौनल्ज पर मुलाहिज़ा किए जा सकते हैं।

फिक़्ह–ओ–तारीख़े इस्लामी अफ्कार–ओ–इक़्दार,जवानी, ख़वातीन, उल्मा–ओ–दानिश्वर और इस्लामी मुआशरा वगैरा जैसे उनावानात पर अब तक आपकी 67 किताबें छप चुकी हैं। वर्तमान के जवानों और ख़वातीन के मौजू को आपने ख़ासी एहमीयत दी है। इस सिलसिला में कई किताबें, मक़ालात–व–मज़ामीन भी तहरीर किए हैं मिनजुम्ला दौर–ए–हाज़िर और मुस्तक़बिल में दरपेश जवानों के मसाइल–ओ–मुश्किलात, जवान और असरी तक़ाजे, ख़्वातीन और

बदलता ज़माना और जवानी के तक़ाज़े वगैरा जैसी किताबों का नाम लिया जा सकता है।

आपकी तालीफात–व–तहक़ीक़ात कई मारूफ इलमी रिसालों और मजलों में शाए हो चुके हैं।इन मज़ामीन दीनी मौजूआत के असरी उलूम की तरक़्क़ी व पेशरफत से मुताल्लिक मौजूआत मौजूद हैं। Turnintin Passed Research

अंग्रेजी, तुर्की, आजरी, फारसी, स्वाहिली और अब उर्दू जैसी मारूफ जबानों में आपकी किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं।

आपकी आडीयो लाइब्रेरी है जिसमें 600 से अधिक तक़ारीर हैं, जो आपके अफ़्कार–ओ–नज़रियात की तर्जुमान हैं।

http://www-alyousif.org आपका वैब साईट जिस पर आपसे मुताल्लिक मजीद तफसील मौजूद है।

बारगाहे ख़ुदा में दुआ है कि वो मौसूफ़ को मजीद ज़ोर–ए–क़लम अता कर ताकि आलम–ए–इस्लाम उनके इल्मी ख़िदमात–व–रश्ख़ाते क़लम से फैजयाब हो सके ।

मिर्ज़ा अस्करी हुसैन
(कुवैत)

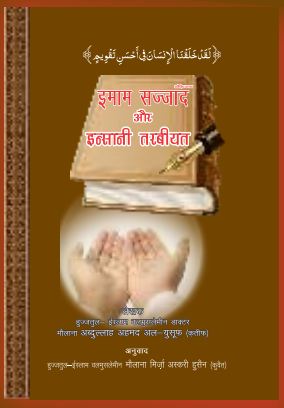

लेखक

हुज्जतुल– ईस्लाम वलमुसलेमीन डाक्टर

मौलाना अब्दुल्लाह अहमद अलयुसूफ (क़तीफ)

अनुवाद

हुज्जतुल–ईस्लाम वलमुसलेमीन मौलाना मिर्ज़ा अस्करी हुसैन (कुवैत)

IDARA-E-ISLAH

ISBN 938747966-8

9 789387 479661

IDARA-E-ISLAH

Masjid Deewan Nasir Ali

Murtaza Husain Road, Lucknow-226003 U.P. INDIA

Ph. & Fax: 0091-522-4077872,www.islah.in

E-mail: mahnamaislah@gmail.com,islah_lucknow@yahoo.co.in